ISBN No. : 978-93-341-2152-0

कवि ईसुरी के फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता



डॉ राजीव अग्रवाल

दिनेश कुमार

पलक भारती

कवि ईसुरी के फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता

डा.राजीव अग्रवाल

दिनेश कुमार

पलक भारती

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹ 99

ISBN: 978-93-341-2152-0
प्रकाशक :पलक भारती

उमरार खेड़ा उरई ,
जिला जालौन (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड — 285001

मो.—9559287541

- ई-मेल: palakbharti9595@gmail.com

कवि ईसुरी के फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

दिनेश कुमार

एम.ए., एम.एड.

पलक भारती

बी.एस-सी., बी.एड.

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है जब राष्ट्र के सभी नागरिकों को सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता,चिंतन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रम्हांड की परिधि को लांघ है वरन अपनी सहायता था संस्कृति का विकास करते हुए आनंददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाती है । शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है की वह संसार में अपनी अलग पहचान बनाता है। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुंचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

हमारे देश में कवियों का बड़ा ही महत्व रहा है, यह आज से नहीं युगों -युगों से अलग- अलग समय काल में प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल, जहां पर कवि निरंतर चिंतन करते रहते हैं और नई- नई विचारधाराओं को अपने देश की संस्कृति हेतु प्रवाहित करते रहे है और आज भी कर रहे है, उनमें से एक बुंदेली कवि ईसुरी भी है, जिन्होंने बुंदेलखंड में फाग कृतियों पर कार्य किया जो की बुंदेलखंड में होली के समय में विशेष रूप से जागरण कार्यक्रम होता है। प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है,”कवि ईसुरी की फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता”
प्रस्तुत पुस्तक को छः अध्याय में विभाजित किया गया है -

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्धयन परिचय है,इसके अंतर्गत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं, अध्धयन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता तथा प्रादुर्भाव पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्धयन से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जिसके अंतर्गत शैक्षिक विचार धारा से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय कवि ईसुरी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित है। जिसके अंतर्गत उनके बाल्यजीवन, वंश परंपरा, अध्धयन यात्रा, गृहस्थ जीवन, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान एवं विभिन्न पहलुओं पर सविस्तर वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में कवि ईसुरी के साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसमे उनके द्वारा लिखी गई एकमात्र कृति ईसुरी की फागों का वर्णन है।

पंचम अध्याय में कवि ईसुरी की फागों में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन व प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, अध्यन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सौददेश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है, इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने के नितांत आवश्यकता होती है। एक मनुष्य के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में कवि ईसुरी की फागों की वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विदवतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

डॉ. राजीव अग्रवाल
दिनेश कुमार
पलक भारती

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा को एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ है एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेताएँ आ जाती हैं। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी शक्तियाँ (भौतिक और सामाजिक शक्तियां) भी प्राप्त होती है। मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। यही क्रिया- प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है।

शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार, शिक्षा मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आंतरिक शक्तियाँ विद्यमान होती है, उनका विकास वातावरण के सम्पर्क में से होता है।

1.2 हिंदी शिक्षण स्वरूप

हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ अनेक विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है। इसीलिए उत्तर भारत में प्रथम भाषा होने के साथ-साथ देश के अनेक राज्यों में हिंदी की स्थिति द्वितीय भाषा और कुछ राज्यों में तृतीय भाषा की है। इसके अतिरिक्त विश्व के अन्य अनेक देशों के विद्यार्थी भी हिंदी सीखते हैं। इन सभी रूपों में हिंदी का शिक्षण हिंदी भाषा शिक्षण है।

अतः हिंदी भाषा शिक्षण को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं-

- प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण
- द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण
- विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण

प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण हिंदी भाषी क्षेत्रों में किया जाता है। इन क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में हिंदी का व्यवहार होता रहता है, इसलिए हिंदी के औपचारिक और साहित्यिक स्वरूप का ही शिक्षण किया जाता है। भाषा कौशल की दृष्टि से केवल पढ़ना और लिखना कौशलों का शिक्षण ही अपेक्षित होता है। द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी सिखाने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। वहाँ अध्येता की मातृभाषा का भी व्यापात होता है। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वहाँ हिंदी का परिवेश भी उपलब्ध नहीं होता। द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अध्येता का उद्देश्य भी महत्वपूर्ण होता है कि वह

हिंदी क्यों सीखना चाहता है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण एक बड़ा क्षेत्र है, जिस पर भाषा की दृष्टि से अलग-अलग विचार किया जा सकता है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रविधि और सामग्री इस बात पर भिन्न हो जाती है कि अध्येता किस रूप में हिंदी को सीखना चाहता है।

वर्तमान परिवेश में हिंदी भाषा शिक्षण को तकनीकी माध्यमों से जोड़ना नितांत आवश्यक है। यदि हिंदी भाषा शिक्षण को वर्तमान तकनीकी जगत के साथ अद्यतन करना है तो यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यमों का हिंदी भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाए। डिजिटल माध्यमों से तात्पर्य है- कंप्यूटर और मोबाइल आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षण- प्रशिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग आवश्यक है। वर्तमान समय में मोबाइल केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मिनि- कंप्यूटर के रूप में कंप्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनेकानेक कार्यों को हमारी मुट्ठी में रहते हुए संपन्न कर रहा है। इसीलिए सामान्य संचार के लिए प्रयुक्त मोबाइलफोनों से अलग इन्हें स्मार्टफोन कहा जाता है। हिंदी भाषा शिक्षण को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मोबाइल और स्मार्टफोन प्लेटफॉर्म का भी अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है।

हिन्दी शिक्षण के पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा के अनेक कवि एवं साहित्यकारों को स्थान दिया गया है

1.3 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के अतिरिक्त प्रशासन और व्यवसाय जैसे तत्वों के समाविष्ट होने के कारण इसकी दशा और दिशा एक सामान्य शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न हो चुकी है। इसका मूल उद्देश्य अक्षर ज्ञान से शुरू होकर जीविकोपार्जन के किसी साधन तक सीमित हो चुका है| जिसके चलते मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित होता है। इस बाधा के उत्पन्न होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार की कुंठाओं और वैमनस्य का अंकुरण होता है, जो आगे चलकर एक वृहद समस्या का रूप धारण कर लेता है जिनमें भेदभाव, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिकता प्रमुख हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता के आधार पर कुछ विशिष्टताएँ है परन्तु वह उपयोगिता मनुष्य को भौतिक संसाधनों के चरम सुख की तरफ ले जाती है। भौतिक संसाधनों की अधिकता और कमी के आधार पर समाज का विघटन होना शुरू हो जाता है और मनुष्य उच्चवर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा निम्न वर्गीय श्रेणियों में गिने जाने लगते हैं जबकि शिक्षा का लक्ष्य असमानता उत्पन्न करना नहीं होता वरन् मानव पीढ़ी के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करते हुए उन्हें पूर्णता प्रदान करना होता है। साथ ही भौतिकता नैतिक मूल्यों से संरक्षित रहती है जिसका विकास आध्यात्मिकता से होता है जो कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अंग नहीं है जबकि शिक्षा एक मूलभूत आवश्यकता होती है ताकि हमारी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकताएँ पूर्ण हो सकें तथा इस आधार पर ही किसी शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन किया जा सकता है। इस शिक्षा पद्धति में आर्थिक आवश्यकता के अतिरिक्त कोई अन्य आवश्यकता को आवश्यकता नहीं समझने की भूल की जाती है। जिसके चलते समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

1.3.1 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

शिक्षा की संस्था सभ्य समाज की एक जरूरी संस्था का स्थान ले चुकी है। अतः शिक्षा किस लिए हो या उसका क्या उद्देश्य हो, यह प्रश्न समाज और व्यक्ति के जीवन के संदर्भ में उठना स्वाभाविक है। देश में आजकल यह बात आम होने लगी है कि हमारी शिक्षा अपने परिवेश संस्कृति से कटती जा रही है। जिस समाज या संस्कृति से शिक्षा का पोषण होता है और जिसके लिए वह प्रासंगिक होनी चाहिए वह एक दुःस्वप्न सरीखी होती जा रही है। इन सबके बीच जो पढ़-लिख जाता है वह मानो एक बड़ी यांत्रिक व्यवस्था के उपकरण के रूप में ढल जाता है। प्रतिस्पर्धा की दुनिया में उसका उद्देश्य सफलता, उपलब्धि और भौतिक प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने तक सीमित हो रहा है। इस तरह यह शिक्षार्थी के मानस को संकुचित बनाने का काम कर रही है। एक ओर तो विश्वस्तरीय शिक्षा देने का संकल्प लिया जाता है तो दूसरी ओर सर्वत्र एक ही ढेर पर पढ़ाई करने की कवायद भी जारी है। आज प्रचलित शिक्षा मनुष्य को स्वचालित रोबोट बनाने पर जोर देती है। इस शिक्षा से निकलने वाले होनहार युवाओं की स्थिति विचित्र हो रही है। जिस सीढ़ी के सहारे चढ़कर वे ऊपर पहुंचते हैं उस सीढ़ी से बेझिझक अलग हो जाते हैं। वे उस भूमि से अलग हो जाते हैं जिसने जीवन दिया। यह शिक्षा सांस्कृतिक विचार, विश्वास, सहयोग, सहनशीलता आदि की कीमत पर दी जा रही है। लिहाजा उनमें सामाजिक सृजनात्मकता और निजी लाभ के आगे किसी तरह की सामाजिक सकारात्मकता विरल होती जा रही है। यदि हम स्कूली शिक्षा को लें जो शिक्षा का प्रवेश द्वार है, तो पाते हैं कि भारत में पहले कई तरह के विद्यालय चलते रहे हैं। यहां प्राचीन काल में गुरुकुल, पाठशाला और मदरसा मौजूद थे। यहां आने के बाद अंग्रेज अधिकारियों ने प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में जो रिपोर्टों लिखीं वे आश्चर्यजनक रूप से इसकी अच्छी स्थिति प्रदर्शित करती हैं। उनकी नजरों में तब यहां की शिक्षा संस्कृति से जुड़ी थी। बाद के दिनों में कोठारी शिक्षा आयोग द्वारा संस्कृति पर ध्यान देने की बात की गई थी। उसने इस बात पर जोर दिया था कि कार्यक्षेत्र, शिक्षा, शिक्षा आयोग द्वारा संस्कृति पर ध्यान देने की बात की गई थी। उसने इस बात पर जोर दिया था कि कार्यक्षेत्र, शिक्षा, घर, परिवार, व्यक्ति और समाज के बीच कोई द्वंद्व नहीं होना चाहिए। महात्मा गांधी ने भी नई तालीम' का विचार दिया था जिसमें शरीर, हाथ, , बुद्धि सबका संतुलन होता है और इसके लिए उन्होंने स्थानीय संसाधन के उपयोग का सुझाव दिया था। इसमें बौद्धिकता पर अतिरिक्त बल न देकर शरीर, मन, आत्मा सब पर ध्यान देने की बात कही गई। इसके अंतर्गत स्वावलंबन, देशभक्ति, आत्म-संपन्नता और संयम जैसे जीवन मूल्यों पर बल देना प्रस्तावित है। प्राथमिक शिक्षा से महभंग के साथ कई विकल्पों पर काम शुरू हुआ। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने शांति निकेतन के पास श्री निकेतन बनाया था। रुक्मिणी देवी अरुंडेल, एनी बेसेंट और जे कृष्णमूर्ति ने भी अलग-अलग प्रयास किए। इन सब प्रयासों में जीवन कौशल और कला पर बल दिया गया ताकि छात्रों को आस-पास की दुनिया से जुड़ने का भी अवसर • मिले। उनका मानना था कि समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए प्राचीन और नए हुनर भी आने चाहिए जो संस्कृति विशिष्ट होते हैं। शिक्षा के मूल्य की अभिव्यक्ति मूर्त और अमूर्त, दोनों माध्यमों से होती है। समाज और समुदाय व्यक्त से ऊपर होते हैं। भारत की समृद्ध वाचिक परंपरा बड़ी प्राचीन है। आज जो शिक्षा (मस्तिष्क) विदेश से लाकर देश में प्रत्यारोपित की जा रही है वह एक हद तक भारतीय मूल्यों को जड़ से विस्थापित कर रही है। आर्थिक संपन्नता से सांस्कृतिक विपन्नता की

भरपाई नहीं हो सकती। नैतिक मूल्यों का अभाव, तनाव, द्वंद्व, हिंसा और असहनशीलता तो किसी भी तरह ग्राह्य नहीं है। मनुष्यता के विकास के लिए संस्कृति आधारित शिक्षा के अतिरिक्त और कोई साधन उपलब्ध नहीं है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि में अच्छी दुनिया वह है जिसमें बहुलता, पारस्परिकता और सह अस्ति हों, पर हम इसे छोड़कर अंग्रेजी पर अधिकार करने चले और उसी ने हम पर अधिकार जमा लिया। सांस्कृतिक क्षति के चलते हम बोलने और सोचने को लेकर विभाजित व्यक्तित्व वाले होते जा रहे हैं। अर्थात बाहर से ग्रहण किया या लिया, पर अंदर जो मौजूद है वह गया भी नहीं। अब द्वंद्व और दुविधा के साथ किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। औपनिवेशिक शक्तियों की भाषा हमारा माध्यम हो गई है। धर्म, भाषा, पशु, पक्षी, प्रतिमा, पुरातत्व, कला, राजनीति और अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्रों में भारतीय अपनी शिक्षा से अपरिचित होते जा रहे हैं। हमें अपनी संस्कृति की भी चिंता नहीं है। विद्यालयों में प्रक्रिया के स्तर पर अध्यापक और सहपाठी के साथ सहयोग कैसे स्थापित किया जाए यह आज की कठिन चुनौती बन गई है। आज शिक्षा एक खास तरह का व्यापार बनती जा रही है। विद्यालयों के साथ समाज का रिश्ता नहीं बन रहा है और जन भागीदारी बहुत सीमित हो गई है। आधुनिकता और यहां की प्राचीन ज्ञान परंपरा के बीच आज तक सामंजस्य नहीं बन पाया है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति तो हो रही है, पर इन सबके बीच इंसान खो गया है। आज बुद्ध, महावीर, ईसा, महात्मा गांधी के विचार कहां हैं? हम किधर जा रहे हैं? आज यह विचारणीय सवाल हैं। हमें भौतिकता के मिथक तोड़ने होंगे। मशीनीकरण की होड़ से बचना होगा। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्थित सामाजिक चेतना, ब्रह्मांडीय चेतना ही आधुनिक आत्मकेंद्रित उपभोक्तावाद की समस्या का समाधान कर सकती है। अहं का प्रकृति पर विजय की जगह प्रकृति और समाज के बीच संबंध स्थापित करने से ही स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय के विचार जीवित होंगे। शांति की संस्कृति का विकास नैतिक अनुशासन से ही आ सकेगा। और तभी बच्चे में श्रेष्ठ का आविष्कार करने की ललक और स्वावलंबी जीवन व्यतीत करने की इच्छा पनप सकेगी। तभी पूर्ण सामाजिक विकास और धार्मिक समानता भी आ पाएगी। दरअसल विचारों का विकास और उनकी समाज में उपस्थिति के कई आधार होते हैं। प्राय: माना जाता है कि आधुनिकता का विचार पश्चिम से भारत की ओर आगे बढ़ा। यहां की अपनी आधुनिकता को औपनिवेशिक आधुनिकता ने नकारात्मक ढंग से प्रभावित किया। यहां एक तरह की संकर या मिश्रित आधुनिकता का आरंभ हुआ। यहां की आधुनिकता पश्चिमी आधुनिकता से जटिल रूप में जुड़ी और फिर शिक्षा का सांस्कृतिक विमर्श भी बाधित हुआ । जाहिर है शिक्षा का प्रयोजन भविष्य के लिए तैयारी और नियोजन से जुड़ा है। इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे में बुंदेलखंडी संस्कृति से परिपूर्ण ईसुरी की फाग पढ़ा जाना आवश्यक है और इन खामियों को दूर किया जाना चाहिए।

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

भारतेन्दु युग के लोककवि ईसुरी पं गंगाधर व्यास के समकालीन थे और आज भी बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। ईसुरी की रचनाओं में ग्राम्य संस्कृति एवं सौंदर्य का वास्तविक चित्रण मिलता है। उनकी ख्याति फाग के रूप में लिखी गई उन रचनाओं में हैं, जो विशेष रूप से युवाओं में बहुत लोकप्रिय हुई। ईसुरी की रचनाओं के माध्यम से उनकी योग्यता, व्यावहारिक ज्ञान का बोध होता है। ईश्वरी की रचनाओं में निहित बुन्देली लोक जीवन की सरसता, मादकता और सरलता

और रागयुक्त संस्कृति की रसीली रागिनी से मदमस्त करने की क्षमता है। ईश्वरी की रचनाएँ प्रगति वर्द्धक जीवन श्रंगार, सामाजिक परिवेश, राजनीति, भक्तियोग, संयोग, वियोग, लौकिकता, शिक्षा चेतावनी, काया, माया पर आधारित हैं। गौरी शंकर द्विवेदी ने उनकी फागों का प्रथम संकलन तैयार किया था। ईसुरी को बुंदेलखंड में जितनी ख्याति प्राप्त हुई उतनी किसी कवि की नहीं है। ग्राम्य संस्कृति का पूरा इतिहास केवल ईसुरी की फागों में मिलता है। उनकी फागों में प्रेम, श्रृंगार करुणा, सहानुभूति, हृदय की कसक एवं मार्मिक अनुभूतियों का सजीव चित्रण है।

1.5 समस्या के कथन

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है—

"कवि ईसुरी की फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता"

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- बुन्देलखंड के प्रसिद्ध लोक कवि ईसुरी प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- कवि ईसुरी प्रसाद की साहित्यिक सर्जना का अध्ययन करना।
- कवि इसुरी प्रसाद के फाग गीतों में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- अध्ययन की उपादेयता चिह्नित करना।

1.7 शोध विधि

शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालकों के व्यवहार में विकास एवं परिवर्तन करना है अनुसंधान तथा शिक्षण क्रियाओं द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षा अनुसंधान कहते है। इस प्रकार शिक्षा अनुसंधान के प्रमुख मानदण्ड अधोलिखित हैं:

- शिक्षा के क्षेत्र में नवीन 'तथ्यों' की खोज नवीन सिद्धान्तों तथा सत्यों का प्रतिपादन करना अर्थात् नवीन ज्ञान की वृद्धि करना।
- नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होनी, चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके प्रभावशाली बना सकें।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या क्षेत्र-शिक्षण या बालक विकास होना चाहिए।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सकें तभी उसकी उपयोगिता हो सकती है।

इस प्रकार से यह वह शोध है जो शिक्षा के किसी भी और सभी पहलुओं पर किया जाता है। तो, यह दुनिया भर के शिक्षकों के बारे में हो सकता है, या किसी विशिष्ट कक्षा में एक विशेष शिक्षक के बारे में हो सकता है। यह छात्रों की विफलता दर,

या पाठ्यक्रम में उपयोग की जाने वाली विशिष्ट मूल्यांकन विधियों के मूल्य को देखने के बारे में हो सकता है। संक्षेप में, शोध का फोकस बहुत संकीर्ण या बहुत व्यापक हो सकता है। शैक्षिक अनुसंधान का सामान्य उद्देश्य शिक्षा में सुधार करना और शिक्षा से संबंधित ज्ञान नए और विभिन्न तत्वों को विकसित करना है।

प्रस्तुत लघु शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन विधि का चयन किया गया है

1.7.1 वर्णनात्मक अध्ययन विधि

शिक्षा तथा मनोविज्ञान संबंधी अनुसन्धान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का सबसे अधिक महत्व है, और यह व्यापक रूप से व्यवहार में आया है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, ''वर्णनात्मक अनुसन्धान क्या है', का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही है, प्रक्रियाएँ जो चल रहीं हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा जो नई दिशाएँ विकसित हो रहीं हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।

वास्तव में किसी समस्या के समाधान में आगे बढ़ने से पूर्व व्यक्ति को उस विषय से परिचित होना आवश्यक है जिसके क्षेत्र में वह कार्य कर रहा है। अत: अन्य विज्ञानों के समान ही शिक्षात्मक अनुसन्धान में भी प्रारंभ में किसी घटना विवरण अथवा विषय के सम्बन्ध को स्पष्ट करने पर विशेष ध्यान था। छात्रों, विद्यालयों, प्रशासन, पाठ्यक्रम, अथवा किसी विषय के शिक्षण संबंधी समस्या के समाधान से पूर्व अनुसंधानकर्ता के मन में यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना मूल उद्देश्य होता है। किन्तु वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता का सम्बन्ध केवल तथ्यों को एकत्र करने मात्र से नहीं है अपितु एक कुशल अनुसंधानकर्ता का लक्ष्य तो विभिन्न चरों में संबंध ढूंढना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

1.7.2 केस अध्ययन विधि

इसके अंतर्गत शोधकर्ता किसी सामाजिक इकाई एक व्यक्ति, परिवार, समूह, सामाजिक संस्था अथवा समुदाय का गहन अध्ययन करता है। वह उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली भूतकालीन घटनाओं अथवा अनुभूतियाँ, वर्तमान स्थिति एवं वातावरण के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र करता है। इन तत्वों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने के पश्चात् वह उस इकाई की स्थिति का चित्रण करता है। केस स्टडी विधि में एक व्यक्ति, समूह, संस्था एवं समुदाय का गहन अध्ययन किया जाता है। पी० बी० यंग ने केस अध्ययन विधि इस प्रकार परिभाषित किया है। ''केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई के जीवनी का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जा सकता है।यह अध्ययन सामाजिक वास्तविकता को जानने के लिए प्रदत्तों के संकलन, संगठन, विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण का एक ढंग है। केस स्टडी अध्ययन विधि को एकल अध्ययन विधि या एकल अध्ययन विधि अथवा व्यक्ति अध्ययन विधि के रूप में भी संबोधित किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

मन्ये विधात्रा जगदेक काननम् विनिर्मित वर्षमिदं सुशोभनम्

धर्माश्व्युत्पाणिकियन्ति यत्र वै कैवल्य रूपं फल प्रचीयते।।।

मनुष्य को सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए कर्म करने की आवश्यकता पड़ती है। कर्मप्रधान व्यक्ति ही जीवन में वास्तविक सुख का आनंद प्राप्त कर सकता है। अकर्मण्यता मनुष्य को निराश और भाग्यवादी बनाती है।

मनुष्य के कर्म अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ कर्म तो यह अनिच्छापूर्वक बाध्यता के मनुष्य साथ करता है परंतु मनोयोग से किया गया कृत्य ही उसे सच्चा आनंद प्राप्त कराता है। इन समस्त क्रियाओं में अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है। अध्ययन प्रिय व्यक्ति स्वयं को सदैव प्रसन्नचित्त करता है। अध्ययन में मनुष्य की अभिरुचि सदैव उसे उत्थान की ओर ले जाती है। अध्ययन की महिमा अनंत है। बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय कवि ईशुरी की कृतित्व का अध्ययन समाज को नई दिशा देने वाला है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध ईसुरी की फागें की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता पर आधारित है; निश्चय ही इसका अध्ययन शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं जन सामान्य के लिए अनुकरणीय एवं ऊर्जा के स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

2.1 प्रस्तावना

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसन्धान साहित्य की संज्ञा दी जाती है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है; दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

अनुसन्धान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध हैं। अनुसन्धान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है। साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसन्धानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसन्धान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है। अनुसन्धान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्त्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं।

ट्रेवर्स के अनुसार, “किसी भी क्षेत्र की समस्याओं एवं तथ्यों से परिचित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढ़ना आवश्यक होता है, सम्बन्धित साहित्य की समस्याओं एवं तथ्यों के ज्ञान से शोधकर्ता विषय हेतु संगत तथा असंगत बातों की जानकारी प्राप्त करता है।

डब्ल्यू. आर. बोर्ड ने साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करते हुए कहा है कि, “किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला की रचना करता है जिस पर समस्त भावी कार्य किया जाता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ज्ञान की इस आधारशिला को दृढ़ नहीं कर लेते हैं।

हमारा कार्य सतही व नवसिखुआ होने की सम्भावनाएं है एवं प्राय: पूर्व में किसी अन्य के द्वारा अच्छे ढंग से किया गया कार्य को दोहराना रहता है।

“The literature in any field forms the foundation upon which all future work will be built. If we fail to build this foundation of knowledge provided by the literature, our work in likely to be

shallow and naïve and will often duplicate work that has already been done better by someone else.” W.R. Borg

किसी भी अनुसन्धान कार्य को उचित रूप से सम्पादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसन्धान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसन्धान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है। सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है:

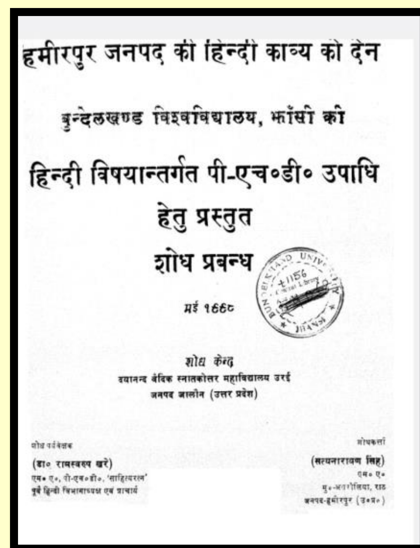
- किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है।
- पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है।
- किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है। • लिए गए अनुसन्धान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे,किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है।
- लिए गए अनुसन्धान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है।
- समस्या के समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है—

सत्यनारायण सिंह (1998) ने ‘हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन’ नामक शोध प्रबन्ध का अध्ययन किया तो पाया गया कि—

❖ इस शोध प्रबंध में हमीरपुर जनपद की हिंदी काव्य को देन कियान्तर्गत जनपद के उन ज्ञात अज्ञात कवियों को स्थान दिया गया है जो अब तक हिंदी साहित्य के लिये अनजान रहे हैं। इस जनपद में मूर्धन्य विद्वानों की एक लंबी श्रृंखला है। जनपद की प्रत्येक तहसील में हिंदी के विद्वान कवि हुए और आज भी विद्यमान हैं। इस जनपद के कवियों की यह



हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी को

हिन्दी विषयान्तर्गत पी-एच०डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

मई १९९०

शोध केन्द्र

दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई

जनपद जालौन (उत्तर प्रदेश)

शोध पर्यवेक्षक

(डा० रामस्वरूप खरे)

एम० ए०, पी-एच०डी०, 'साहित्यरत्न'

पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य

शोधकर्ता

(सत्यनारायण सिंह)

एम० ए०

मु०-अतरौलिया, राठ

जनपद-हमीरपुर (उ०प्र०)

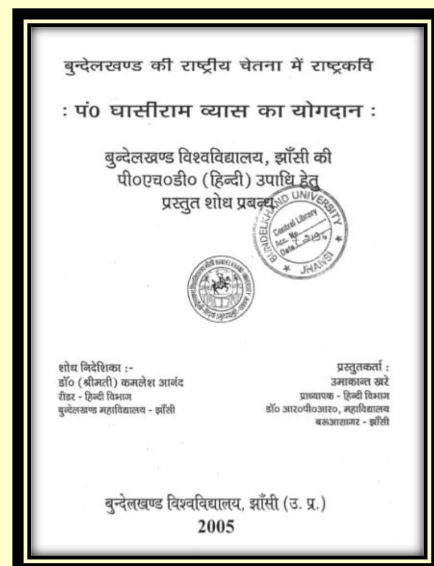
विशेषता है कि उन्होंने केवल खड़ी बोली में ही काव्य सृजन नहीं किया अपितु जनपद के जन-जन में बोली जाने वाली बुन्देली में उत्कृष्ट काव्य सृजन करके बुन्देली को साहित्यिक जगत में सम्मानजनक स्थान दिलाया है।

- ❖ बुन्देली में उच्च कोटि का काव्य सृजन करने वाले वर्तमान काल के कवियों में तहसील राठ के स्व० डा० हरगोविन्द सिंह, श्री रामखिलावन निरंजन स्थ० रावत खूबचंद्र व पं० रामसनेही तिवारी के नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- ❖ बुन्देली में लिखी गयीं इनकी कई पुस्तकें हिंदी काव्य साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। सन् 1959 में प्रकाशित फाग मंजरी सन् 1966 में घाघ की शैली में रचित छक्का पचीसी, सन् 1980 में प्रकाशित पुष्पांजलि, 1978 में सद्वाक्य मंजरी तथा सन् 1990 में सद्विचार सतसई कुछ ऐसी काव्य कृतियां हैं जिनसे वर्तमान पीढ़ी के कवि मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं बुन्देली शब्दावली पर डा० हरगोविन्द सिंह द्वारा लिखा गया वृहद शोध ग्रन्थ तो बुन्देली साहित्य के लिये एक मील का पत्थर है। डा० सिंह के अतिरिक्त उपयुक्त वर्णित अन्य कवियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया है।
- ❖ तहसील कुलपहाड़ के स्व० खेतसिंह यादव, तहसील महोबा के श्री भारतेन्दु अड़जरिया व श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया, तहसील चरखारी के स्व० ख्यालीराम व श्री कालका प्रसाद सक्सेना मकरंद ने भी बुन्देली के काव्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। प्राचीन कालीन कवियों में से तो लगभग सभी कवियों ने अपने काव्य सृजन में बुन्देली को ही विशेष महत्व दिया है।
- ❖ इस प्रकार साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि का काव्य सृजन जनपद हमीरपुर के कवियों द्वारा किया गया है। लगभग 150 कवियों का जीवन परिचय तथा काव्य कृतियों का विवरण देते हुये उनके काव्य का सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास इस प्रस्तुत शोध प्रबंध द्वारा किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस माध्यम से जनपद के कवियों को हिंदी साहित्य जगत में वह स्थान प्राप्त हो सकेगा जिसके कि वे सच्चे अर्थों में अधिकारी हैं।

उमाकांत खरे (2005) ने 'बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि: पं० घासीराम व्यास का योगदान' का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि—

व्यास जी तत्कालीन क्रांति एवं राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित रहे हैं और उनकी रचनायें भी राष्ट्रीय आंदोलन तथा समसामयिक मानवीय समस्याओं से प्रेरित रही हैं।

- ▪ उन्होने हिन्दी साहित्य के इतिहास का पूरी तरह अध्ययन किया था। वे रीति, भक्ति एवं क्रांतिकारी साहित्य से प्रभावित हुये बिना नही रहें। उन्होंने एक ओर रीति विषयक अचार्यात्व का निर्वाह किया तो दूसरी ओर गांधीवाद, राष्ट्रीयता


बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि

: पं० घासीराम व्यास का योगदान :

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
पी०एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

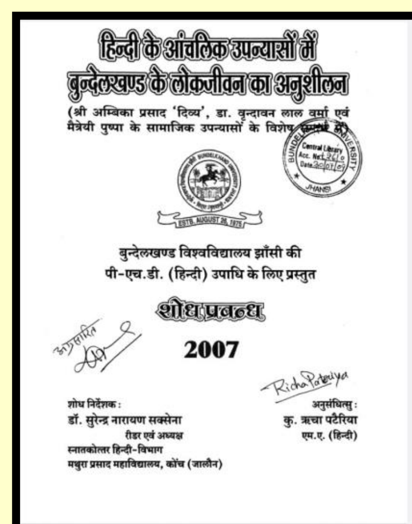
शोध निदेशिका :-
डॉ० (श्रीमती) कमलेश आनंद
रीडर - हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय - झाँसी

प्रस्तुतकर्ता :
उमाकान्त खरे
प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
डॉ० आर०पी०आर०, महाविद्यालय
बरुआसागर - झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ. प्र.)
2005

तथा क्रांतिकारी भावना से प्रभावित होकर तत्सम्बन्धित काव्य रचनायें भी की। लोक साहित्य का सृजन कर लोक कवियों को प्रेरित और प्रभावित भी किया।

- उनके प्रयत्नों से बुन्देलखण्ड कवि मंडली की स्थापना हुई, तत्कालीन साहित्य सेवी इस प्रतिद्वन्दिता से न केवल प्रोत्साहित हुये वरन् सम-सामयिक एवं छंद बद्ध रचनायें करने में पारंगत भी हुये इस प्रकार से इस क्षेत्र में कवि दंगलों की भरमार आ गई और साहित्य सेवी अपनी-अपनी रचनाओं से जन- समुदाय को प्रभावित करने लगे। जनकवि के रूप में व्यास जी की ख्याति बुन्देलखण्ड के ग्रामों ग्रामों में फेल गयी, हजारों लाखों व्यक्तियाँ ने इन काव्य दंगलो से प्रेरणा ग्रहण की तथा अनेक कवियों का आविर्भाव भी इसी माध्यम से हुआ।
- व्यास जी अपनी शैली के कुशल एवं पारंगत कवि रहे। तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनका सक्रिय योगदान रहा। उन्होंने जेल यात्रायें भी की, अंग्रेज सरकार के दमन को भी सहा है, 39 वर्ष की अल्प अवस्था में उन्होनें हैरत अंगेज राष्ट्रीय कार्य किये जेल जीवन मे भी उन्होनें अपनी अमूल्य रचनायें लिखी। राष्ट्रीय नेताओं के निरन्तर सम्पर्क में रहे. स्वतंत्रता आन्दोलन, अछूत आन्दोलन, किसान आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन तथा अन्यान्य राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेकर अपना एक राष्ट्रीय इतिहास निर्मित किया। महात्मा गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और न्याय के सिद्धान्त से भी थे प्रभावित रहे। उनके अनुयायी होने का उन्हें गर्व था। अहिंसात्मक सत्याग्रहों में ही उन्हें विशेष रूचि थी, इसके लिये उन्होनें अपना सर्वस न्यौछावार कर दिया।


हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में
बुन्देलखण्ड के लोकजीवन का अनुशीलन
(श्री अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', डा. वृन्दावन लाल वर्मा एवं मैत्रेयी पुष्पा के सामाजिक उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की
पी-एच.डी. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध
2007

शोध निर्देशक :
डॉ. सुरेन्द्र नारायण सक्सेना
रीडर एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच (जालौन)

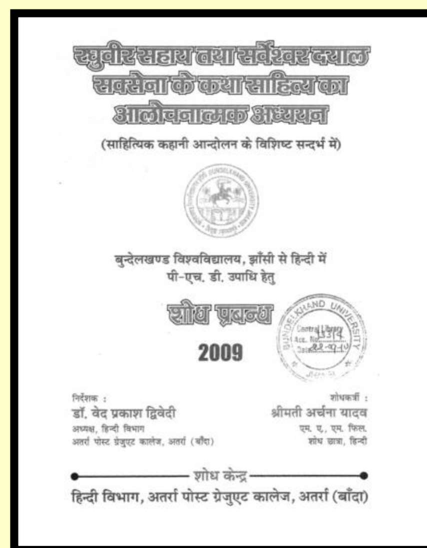
अनुसंधित्सु :
कु. ऋचा पटैरिया
एम.ए. (हिन्दी)

कुमारी, ऋचा पटैरिया (2007) ने 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के लोकजीवन का अनुशीलन (श्री अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', डा. वृन्दावन लाल वर्मा एवं मैत्रेयी पुष्पा के सामाजिक उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)' का अध्ययन करने पर पाया गया कि—

- इन उपन्यासकारों ने अपने आंचलिक उपन्यासों में यहाँ की लोकसंस्कृति एवं लोक सभ्यता को विस्तृत रूप से चित्रित किया है। 'पर्व, उत्सव, व्रत एवं अनुष्ठान' लोकदेवता, मेले, रीति-रिवाज, संस्कार, लोकगीत, नृत्य, वाद्य यंत्र, लोकगाथायें, लोकोक्ति, मुहावरे, बुझौअल, जातीय सद्भाव एवं साम्प्रदायिक सौहार्द, परिवार, पति-पत्नि संबंध, आवास- प्रवास, दिनचर्या, भोजन व्यंजन, लोकाचार एवं लोकरंजन आदि के सुन्दर दृश्य इन उपन्यासों में देखने को मिलते हैं।

- इन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में बुन्देली की अनेक रुढ़ियों एवं कुप्रथाओं का उल्लेख करते हुए उनको दूर करने के लिए अनेक रचनात्मक सुझाव दिये हैं। बालविवाह, पुनर्विवाह, विधवा पुनर्विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, बेमेल विवाह, बेरोजगारी, निर्धनता, अंधविश्वास, छुआछूत, पर्दाप्रथा, अशिक्षा आदि के अनेक चित्र इनके उपन्यासों में विस्तार से देखने को मिलते हैं।
- अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', डा० वृन्दावन लाल वर्मा एवं मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने आंचलिक उपन्यास साहित्य के माध्यम से हिन्दी जगत को बुन्देली लोकजीवन की बारीकियों से अवगत कराया। उनके उपन्यासों को पढ़कर जनमानस में इस विस्तृत भू-भाग के भ्रमण की लालसा जाग्रत हुई ये उपन्यास केवल आंचलिक निधि ही नहीं वरन् हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस प्रकार इन उपन्यासकारों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की थाती में कुछ बहुमूल्य रत्न जोड़ने का सफल प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य जगत इनका सदैव आभारी रहेगा।

श्रीमती अर्चना यादव (2009) ने 'रघुवीर सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन' (साहित्यिक कहानी आन्दोलन के विशिष्ट सन्दर्भ में) का अध्ययन करने के बाद पाया गया कि—


रघुवीर सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

(साहित्यिक कहानी आन्दोलन के विशिष्ट सन्दर्भ में)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से हिन्दी में
पी-एच. डी. उपाधि हेतु

शोध प्रबन्ध

2009

निर्देशक :
डॉ. वेद प्रकाश द्विवेदी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा (बाँदा)

शोधकर्त्री :
श्रीमती अर्चना यादव
एम. ए., एम. फिल.
शोध छात्रा, हिन्दी

शोध केन्द्र
हिन्दी विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा (बाँदा)

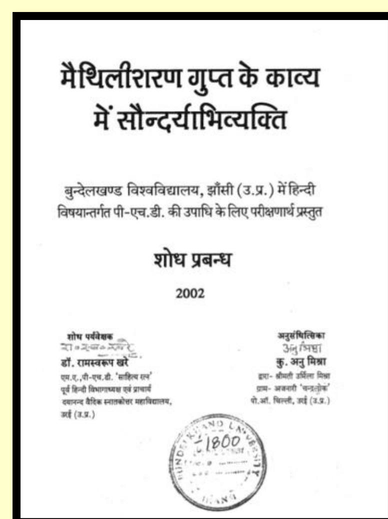
- प्राचीन काल की कहानियों में मानव की बाह्य प्रकृति का चित्रण हुआ करता था केवल आकस्मिक घटनाओं और संयोगों से कहानी की सृष्टि हुआ करती थी. जिसमें मनोरंजन के लिये और कहीं-कहीं कथा को आगे बढ़ाने के लिये अभौतिक और अतिभौतिक सत्ताओं का उपयोग होता था। इन सत्ताओं में प्रतीक की भावना न थी और यदि कहीं थी तो केवल बाह्य शक्ति की प्रतीक होती थी, अंतः शक्ति की नहीं परन्तु आधुनिक काल की कहानियों में मानव की अंतः प्रकृति का चित्रण होने लग गया, जिनमें अभौतिक और अप्राकृत सत्ताओं का उपयोग नहीं होता जब कभी इन सत्ताओं का उपयोग होता भी है, जैसे कि प्रेमचन्द्र और सुदर्शन की कुछ कहानियों में मिलता है. तब ये सत्ताएँ किसी अंतशक्ति की प्रतीक होती है, बाह्य शक्ति की नहीं इस अंतःप्रकृति के चित्रण ने हमें मानव चरित्र और भावना नाम की अदभुत वस्तु दी। मानव अब तक देव, दानव, राक्षस आदि अतिभौतिक और अतिप्राकृत सत्ताओं तथा नियति के हाथों का एक कठपुतला मात्र था, वे उसे जैसे नचाते वह नाचता था. उसे विचार-स्वातन्त्र्य न था. उसकी भावना कोई महत्व नहीं रखती थी परन्तु अब मानव को विचार- स्वातन्त्र्य मिल गया है; वह जो भी काम करता है अच्छी तरह सोच-विचार कर करता है, उसके कामों का प्रभाव उसके चरित्र पर भी पड़ता है आधुनिक काल में मानव चरित्र और मानव मस्तिष्क की प्रधानता स्वीकार कर ली गई और उन्हीं के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ने कहानी

को मनोरंजकता प्रदान की प्राचीन कहानियों की अपेक्षा आधुनिक कहानी की आत्मा अधिक सजीव, गम्भीर और सूक्ष्म है।

- प्राचीन कहानियों में अधिकांश राजा राजकुमार और राजकुमारियों का ही चित्रण हुआ करता था। सच बात तो यह है कि प्राचीन काल में साधारण जनता का कोई विशेष महत्व ही न था राजा का वाक्य ही राज्य विधान हुआ करता था राजा, रानी, राजकुमार, मन्त्री, सामन्त इत्यादि कुछ थोड़े से ही लोग जीवन का सुख पाते थे, शेष मनुष्य पैदा होते थे, खाते पीते थे और मर जाते थे इसलिये प्राचीन कहानियों में राजा, रानी और राजकुमार आदि का ही चरित्र होता था परन्तु आधुनिक काल में सार्वजनिक समानाधिकार की भावना बढ़ चली विधान और शिक्षा की दृष्टि से सभी मनुष्यों को समान अधिकार मिला। स्त्री-पुरुष, शूद्र ब्राह्मण किसी में कुछ भेद न रहा। स्वच्छन्दता की भावना के जोर पकड़ने से सामान्य मानवता के यथार्थ चित्रण की ओर लेखकों की अभिरुचि बढ़ने लगी। अस्तु, आधुनिक कहानी में राजा रानी और राजकुमार के स्थान पर जुम्मन शेख, अलगू साहू, घीसू चमार, मुन्नू मेहतर, महादेव सोनार, सेठ छंगामल, लहना सिंह, जमादार, वकील, बैरिस्टर, डॉक्टर प्रोफेसर कवि, क्लर्क, दीवान, मिनिस्टर आदि सभी लोगों के जीवन काचत्र उपस्थित किया जाने लगा। फिर प्राचीन कहानियों में अधिकांश प्रेम का ही चित्रण हुआ करता था, परन्तु अब प्रेम के अतिरिक्त अन्य भावों और मनोभावों का भी चित्रण होने लगा है सारांश यह है कि आधुनिक काल में कहानियों के विषय और उत्पादन का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत हो गया है।

कु. अनु मिश्रा (2002) ने 'मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सौन्दर्याभिव्यक्ति' नामक शोध प्रबन्ध का अध्ययन करने के बाद पाया गया कि—

- गुप्त जी ने अपनी मानवतावादी दृष्टि को पुष्ट करने के लिये 'साकेत' में भक्ति और दर्शन को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है तथा उसमें क्षण-क्षण नवीनता लाने का सफल प्रयास किया है। साथ ही आधुनिक मानव जीवन के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाले तत्वों (सहृदयता, सौजन्य, सौहार्द, सहानुभूति) को अपने भावों, विचारों और सिद्धान्तों के साथ प्रस्तुत काव्य में एक मन्दिर की भाँति अलंकृत किया है और देशवासियों को धर्म, देशभक्ति तथा अहिंसा का संदेश सुनाया है। इस प्रकार युगानुकूल विचारों से पूर्ण सम्पन्न तथा सुव्यवस्थित यह काव्य, जगत् हित,विश्वकल्याण, तथा मानवता से भरा पड़ा है।



मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सौन्दर्याभिव्यक्ति

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.) में हिन्दी विषयान्तर्गत पी-एच.डी. की उपाधि के लिए परीक्षणार्थ प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2002

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. रामस्वरूप खरे
एम.ए.,पी-एच.डी. 'साहित्य रत्न'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उरई (उ.प्र.)

अनुसंधित्सिका
कु. अनु मिश्रा
द्वारा- श्रीमती उर्मिला मिश्रा
ग्राम- अकनारी 'चन्द्रलोक'
पो.ऑ. चिल्ली, उरई (उ.प्र.)

- गुप्त जी राष्ट्रीय कवि भी हैं और जनता के प्रतिनिधि कवि कहलाने के अधिकारी हैं, क्योंकि आज अपने इस युग संघर्ष का स्वरूप जितनी विविधता, जितनी स्पष्टता एवं जितनी गहनता के साथ गुप्त जी के काव्य में विद्यमान है, उतना अन्य दृष्टिगोचर नहीं होता।

- गुप्त जी के जीवन की व्यापक अनुभूतियों, राष्ट्रव्यापी हलचलों ग्राहस्थ जीवन की आधुनिक समस्याओं, भारतीय संस्कृति की परम्पराओं, युग की परिवर्तित विचार धाराओं, काव्य की नवीनतम शैलियों आदि को साकार रूप देने के लिये साकेत की अवतारणा हुयी।
- गुप्त जी ने 'वस्तु' और 'रस' का समीचीन उपयोग किया है। यही कारण है कि उनके समूचे साहित्य में कहीं भाषा का सौन्दर्य खिलखिला रहा है, तो कहीं भावों की सुन्दर सुन्दर लहरियाँ भी अठखेलियाँ कर रही हैं। वैष्णव भावनाओं से अभिभूत प्रेम के पादपों पर छन्दों के पक्षी कलरव करते हुये दृष्टिगोचर होते हैं, ऐसे नैसर्गिक वातावरण में अनुभूति की षोडसी बालायें अपने निराभरण सौन्दर्य को और अधिक उभार देती हुयीं इस काव्योद्यान में अपनी छटा विकीर्ण करती हुयी बड़ी भली लगती हैं।

कुमारी ऋतु (2020) ने 'ईसुरी के काव्य में नारी संचेतना' नामक शीर्षक पर शोध किया है जिसके अध्ययन में पाया गया कि—

- बुन्देली माटी के यशस्वी कवि ईसुरी की फागें कालजयी हैं। आज भी ग्राम्यांचलों से लेकर शहरों तक, चौपालों से लेकर विश्वविद्यालयों तक इस फागों को केंद्र में रखकर गायन, संगोष्ठियों आदि के आयोजन किए जाते हैं।
- ईसुरी की फागों में समाज के अन्तरंग और बहिरंग दोनों का जीवंत चित्रण प्राप्य है। मानव जीवन का केंद्र नारी होती है। माँ, बहिन, दादी-नानी, सखी, भाभी, प्रेयसी, पत्नी, साली, सास अथवा इनसे सादृश्य रखनेवाले रूपों में नारी जीवन रथ के सञ्चालन में प्रेरक होती है। संभवतः इसीलिए वह नौ दुर्गा कहलाती है। ईसुरी की फागों में नारी का चित्रण उसे केंद्र में रखकर किया गया है।
- नारी चित्रण की सहजता, स्वाभाविकता, जीवन्तता, मुखरता तथा सात्विकता के पञ्चतत्वों से ईसुरी ने अपनी फागों का श्रृंगार किए है। ईसुरी ने अपनी प्रेरणा स्रोत 'रजऊ' को केंद्र में रखकर नारी-छवियों के मनोहर शब्द-चित्र अंकित किए हैं।
- महाकवि ईसुरी ने नारी की उस पीड़ा का वर्णन किया है जो विरह अग्नि में जल रही है। पति घर पर नहीं है। उसे काम पीड़ा सता रही है। होली का त्योहार है। मनचले पिचकारी लिए घूम रहे हैं। वह भी रंग- गुलाल से खेलना चाहती है, किन्तु सामाजिक प्रतिबंध उसे ऐसी अनुमति कहाँ देने वाले हैं।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया, जिसमें 'हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन', 'बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि: पं० घासीराम व्यास का योगदान', रामचरितमानस में हास्य व्यंग्य', 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के लोकजीवन का अनुशीलन (श्री

अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', डा. वृन्दावन लाल वर्मा एवं मैत्रेयी पुष्पा के सामाजिक उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)', ' रघुवीर सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन', 'मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सौन्दर्याभिव्यक्ति', 'ईसुरी के काव्य में नारी संचेतना' आदि विषयों शोध किए गए हैं।

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अभी तक कवि ईसुरी के फागों से सम्बन्धित कोई शैक्षिक शोध कार्य नहीं किया गया है, अतः शोधार्थी द्वारा इसी विषय से सम्बन्धित लघु शोध-प्रबंध कार्य करने का निर्णय किया जिसका शीर्षक 'कवि ईसुरी के फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता' है।

तृतीय अध्याय

जीवन परिचय एवं कृतित्व

ईसुरी का जन्म मऊरानीपुर (झाँसी) के निकट मैड़की नामक ग्राम में हुआ था। उनका पूरा नाम था- ईश्वरीप्रसाद | वे जिझौतिया ब्राह्मण थे । उनके पूर्वज लग भग दो सौ वर्ष पूर्व ओरछा से मेंढ़की में आकर बसे थे। वहाँ उनका पैतृक घर मौजूद है। इन पंक्तियों के लेखक ने कई बार वहाँ की यात्रा की है। वहाँ के निवासी 'ईसुरी बच्चा' के नाम से अपने गाँव के इस लोक कवि का सादर स्मरण करते हैं। मेंड़की के श्रीगयाप्रसादजी पाठक ईसुरी के मित्रों में से थे। अभी दो वर्ष पहले जब हमने उनसे भेंट की तब ये बहुत दुर्बल और रोगराच्या प्रस्त थे। परन्तु यह मालूम होने पर कि हम उनके पास ईसुरी के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने आये हैं, न जाने कहाँ से उनमें स्फूर्ति का संचार हो गया । उठकर बैठ गये, और हमारे बार बार मना करने पर भी लगातार एक घण्टे तक ईसुरी की फारों सुनाकर हमारा मनोरंजन करते रहे।



ईसुरी तीन भाई थे। सदानन्द, रामदीन और ईसुरी । सदानन्द के पुत्र श्री दुर्गाप्रसादजी जीवित हैं और सीपरी बाज़ार, झाँसी के एक मन्दिर में पुजारी हैं। रामदीन के पुत्र नत्थू मेंद की में रहकर कृषि कार्य करते हैं।

ईसुरी का बचपन अपने मामा के यहाँ लुहरगाँव (कौनिया, हरपालपुर) में बीता। उनके मामा के पहले कोई संतान नहीं थी । इसलिए उन्होंने इनको गोद ले लिया था । बाद, उनके पुत्र उत्पन्न होने पर ईसुरी कुछ दिनों वहाँ रहकर अपनी ससुराल सीगोन चले गये । यह स्थान हमीरपुर जिले में बगौरा नामक ग्राम से, जहाँ कि बाद में ईसुरी के जीवन का शेष समय बीता, एक मील दूर है। उनकी पक्षी का नाम स्यामबाई था। उससे केवल एक लड़की हुई । वह धवार ब्याही थी। नाम था गुरनबाई । उसके कोई संतान नहीं हुई और वह भी अब नहीं है। ईसुरी जब तीस वर्ष के थे तभी उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। फिर उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया।

सीगोन में कुछ दिनों रहकर वे धौरों के मुसाहिब ज नामक एक ज़मींदार के यहाँ नौकर हुए। फिर रानी दुलैया (जैतपुरवाली रानी) के यहाँ चले गये। वहाँ से बगौरा आकर रज्जब अली ज़मींदार के कारिन्दा बने और अंत समय तक वहीं रहे। उनके यहाँ वे तहसील वसूली का काम करते थे। वेतन २) महीना और खाना कपड़ा । इन रज्जबाती की विधवा पत्नी आज़ादी बेगम के दर्शन हमने थोड़े दिनों पूर्व नौगाँव में किये थे। वे बहुत वृद्ध थीं। बोलने में उनको कष्ट होता था और कानों से नहीं सुन पाती थीं। इसलिए दुर्भाग्यवश ईसुरी के विषय में हम उनसे कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सके। फिर भी उन्होंने हमसे स्नेहपूर्वक बात की। इन आबादी वेगम की नौकरी की चोरं लक्ष्य करके ही एक बार धवार से बुलौवा आने पर ईसुरी ने निम्नलिखित पंक्तियाँ वहाँ लिख भेजीं—

जोलो रहे पगन से नीक, श्राय गये सबही के।
भये इकठौर रंज के मारें, जा नहँ सकत किसी के।
बने बगोरा रात ईसुरी, कारिन्दा बीबी के।
आना आठ गाँव में हिस्सा, मजा मिलकियत जीके।।

कहते हैं कि तत्कालीन छतरपुर नरेश उनको अपने यहाँ बुलाते रहे और 2) रोज़ वेतन तथा खाना कपड़ा और एक पंडा और डीमर की सुविधा देने को तैयार थे परन्तु बगौरा छोड़कर उन्होंने कहीं भी जाना स्वीकार नहीं किया। यह स्थान उनको इतना प्रिय हो गया था कि एक गीत में वे अपने मित्रों से प्रार्थना करते हैं कि उनकी मृत्यु यदि गंगाजी के पुनीत तट पर भी हो तो भी उनका दाह संस्कार बगौरा में ही पूरा किया जाये :-

यारो इतनो जस कर लीजो, चिता अंत ना दीजो।
गंगा जू लों मरें ईसुरी,दाग बगौरा दीजो।।



उनके इस सुप्रसिद्ध गीत की अंतिम पंक्तियों के आधार पर ही सम्भवतः सर्वसाधारण में अब भी यह भ्रम फैला हुआ है कि ईसुरी बगीरा के मूल निवासी थे हमने भी उनको बहुत दिन हुए सय अपने एक लेख व वैभव' नामक पुस्तक को प्रमाण मानकर छतरपुर के निकट बगौरा नामक ग्राम में उत्पन्न हुआ बता दिया। परन्तु बाद में हमें मालूम हुआ कि वह हमारी भूल थी। बगौरा न तो छतरपुर के निकट ही है और न ईसुरी का जन्म स्थान ही।

ईसुरी के पिता का शुभनाम हमें मालूम नहीं हो सका। उनके मामा का नाम जानकी था। जानकी के पुत्र भूघर हुए। भूधर के पुत्र श्रीबैजनाथजी नायक मौजूद हैं। अवस्था लगभग पैंतालीस के होगी। उन्होंने हमें बताया कि ईसुरी की उन्हें ख़बर है।

जिनके चलें अँगारूँ साका, बड़ी मोहनी माका।
बाँके बोल लगत चीन वॉ , गोली कैसो ठाँका।
बैठे रखो सुनी सब बेसुध मइँ खा जात छमाका।
फागन खाँ इक धीरे पंडा, ईसुर श्राय पताका।
खर्चे रथो सनाका। दूसर होत नाथने बाली।

उनकी मृत्यु के समय वे दस ग्यारह वर्ष के होंगे। कहने लगे कि जब कभी यहाँ चाले तो उधारे बदन, कंधे पर गौड़ी डाले यहीं घर के सामने बैठे रहते थे। सदैव अपनी किसी पुन में रहते जान पढ़ते थे, और कुछ न कुछ गुनगुनाया करते थे।

ईसुरी देखने में मकोले कद के बताये जाते हैं। रंग गोरा दुबले से पहिनाथ, कलियोंदार और सफेद स्पाना जूता बुन्देलखण्डी पहनते थे। फाग कहने का ऐसा अभ्यास था कि बात बात में फाग बनाकर कहते थे। यहाँ तक कि अदालत में जाने पर फागों में ब्यान देते थे। इससे हाकिम उनसे बड़े प्रसन्न रहते थे। एक बार अपने ममयावरे भाई की लड़की की लगुन लेकर गये। वहाँ कविता में ही अपने बरात का निमंत्रण दिया।

ईसुरी के एक शिष्य थे धीरे पंडा। वे उनके घनिष्ठ मित्र भी ये। वह धौर्रा के निवासी थे। फागें गाने में बड़े प्रवीण। ईसुरी की सब फागें वही गाया करते थे। उनकी गायन पारी की प्रशंसा करते हुए स्वयं ईसुरी एक स्थल पर कहते है :-

दिन धीरे खाँ ईसुरी,पचाई परनाम
दिल जानें दिल सौंप दो, दिल की जानें राम।
दिल की राम हमारी जानें, हम तुम लाल बतात जातते,
गीत मिंत झूठ ना मार्ने। काय फूले नई दिखाने। समाने।
आज रात बने। खा परतीत आज भइँ बातें,
सपनन ना हो, माँ हो देख लियत ते,
मौत दिनन में मोरो ईसुरतुमें लगो दिल चानें।

कार्यो के किसी भी गायक के लिए इससे अधिक प्रशंसा के शब्द और क्या हो सकते हैं? ईसुरी और धीरे के बीच कविता में मनोरंजक पत्र-व्यवहार हुआ करता था। ईसुरी ने एक बार उनको लिखा—

धीरे ने इसका जो जवाब भेजा वह भी सुन लीजिए ; दो मित्रों के बीच हार्दिक स्नेह का कम परिचायक नहीं:-

नैना मेंवर भये बारी के रंगरेजिन प्यारी के

एक से दोऊ वेषधारी हैं, रुचिर रेख कारी के।

सालिगराम बीच कमलन के, चितवन अन्यारी के

लेख सुगंध फूल गये फूले, मानस संसारी के।

ईसुर परे इसक के फंदे। प्रासिक है यारी के।

प्रसंगवश यहाँ रंगरेजिन का परिचय दे दिया जाये जो कि पहुंचा से धीरे पंडा को फानें गाने के लिए बुलाती है। यह एक नर्तकी थी। उसके असली नाम का पता नहीं। वह रंगरेजिन के नाम से ही प्रसिद्ध थी। रूपवती, और नाचने में भी कुशल। जहाँ जाती वहाँ ईसुरी की फागें गाती थी। ऐसा जान पड़ता है, ईसुरी उसके प्रति कुछ आकृष्ट थे। उसकी चंचल, काली आँखों को एक जगह भँवर की उपमा देकर वे कहते हैं:-

ईसुरी की जन्म तिथि का हमें अभी तक ठीक पता नहीं चला। परन्तु उनकी मृत्यु पर उनके शिष्य धीरे पयडा ने निम्नलिखित फाग कही, जो कि बहुत प्रसिद्ध है और जिसमें सौभाग्यवश ईसुरी की मृत्यु का सम्पत् समय सदैव के लिए सुरक्षित हो गया

जिदना हम खाँ श्राप बुलावें, हुकुम के पाउत श्रावें।
घोड़ा गाँव सिल्ली मेजो, बिध गत कहा बतावें।
उदना की लाचारी मौको इती तिजारी दावें।
पडुवां से धीरे पंडा खाँ, रँगरेजिन बुलवायें।
नइ नइ फाग बना के ईसुर,दरवाजे हो गावें ॥

है:

ईसुर तजकें गये शरीरा, हती न एकउ पीरा

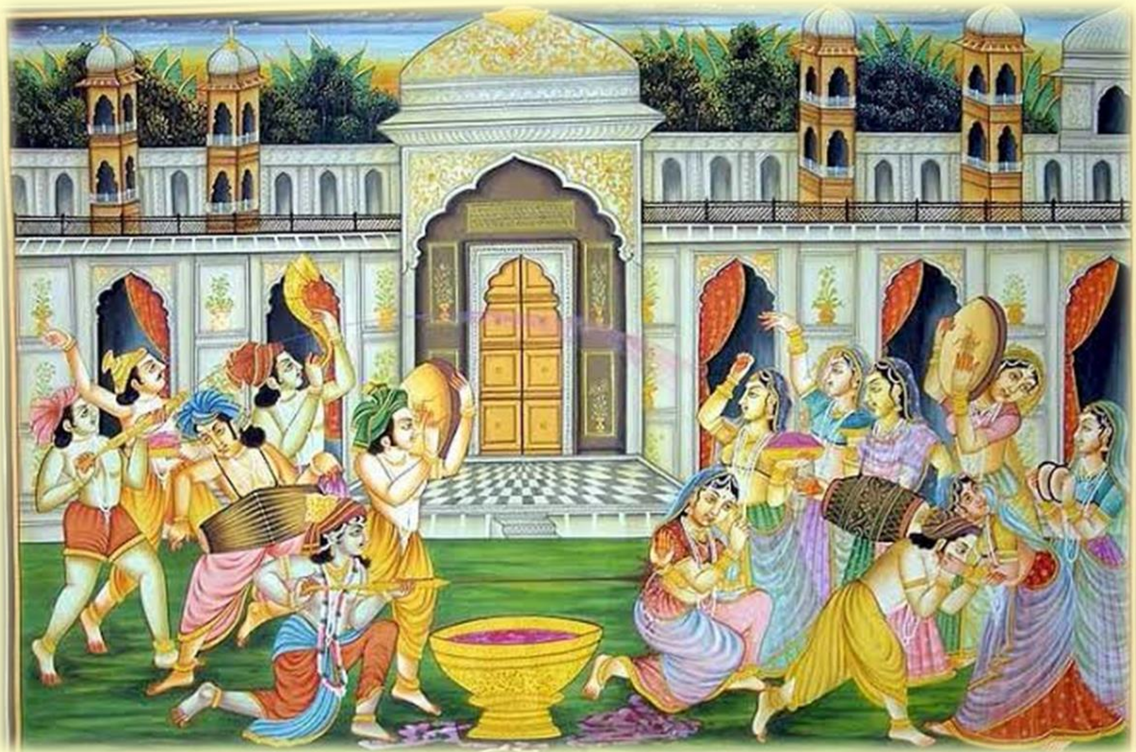
होतन मोर प्यास लग आई, पिएगरम कर गहन कर नीरा।।

सुदी सातें ती उदना, बार सनीचर सीरा।।

संवत् उन्निसौ छयासठ में, उड़ गयो मुलक भमीरा।

इससे यह स्पष्ट है कि ईसुरी की मृत्यु संवत् १९६६ की अगहन सुदि सातें, शनिवार को हुई। उस समय उनकी अवस्था ७०-७२ के लगभग बताई जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि उनका जन्म सं० १८६२ के आसपास हुआ होगा । बगौरा में जब वे अधिक बीमार हुए तो उनकी लड़की उनको धवार ले गई। वहीं उनका देहान्त हुआ ।

एक चबूतरे के रूप में वहाँ उनका स्मारक बना है और बगौरा में वह घर भी आबाद है जिसमें कि ईसुरी बहुत दिनों रहे । ईसुरी की फागों से जिन सज्जनों को थोड़ा भी प्रेम है, उनको एक बार इन दोनों स्थानों की तीर्थयात्रा अवश्य करनी चाहिए।



ईसुरी विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे पर सरस्वती की उन पर विशेष कृपा थी। वे जन्म सिद्ध कवि थे। देहातों में होली के अवसर पर एक प्रकार के गीत गाये जाते हैं । वे फाग कहलाते हैं । ईसुरी की सहज काव्य-प्रतिभा इन फागों के रूप में ही प्रस्फुटित हुई है। शिष्ट-समाज में होली के इन गीतों का कोई चलन नहीं है। वे एक विशेष प्रकार के प्राथमिक सुर और ताल के रूप में प्राकृत मानव के मन का उच्छवास मात्र हैं। पर ईसुरी को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने अपनी अद्भुत और स्वाभाविक कविश्वशक्ति के बल से इन उपेचित और अनारत गीतों को साहित्य और संगीत का एक अनुपम रूप प्रदान किया है। यह उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। हमारे कुछ मित्र उसको 'महा- कवि' कहते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो उसकी रजऊ नाम की काल्पनिक नायिका में आद्याशक्ति नारी का परम उदात्त रूप देखने के प्रयासी हैं। परन्तु इस तरह की चेष्टा हास्या- स्पद

है। ईसुरी कवि था। एक ऐसा कवि दिया और अनुभव के द्वारा जिसका पूर्ण विकास नहीं हो सका, सो झूठे पांडित्य ने जिसकी कविता को कृत्रिम नहीं बनाया।

यहाँ उसके सम्बन्ध में इतना ही कहना बहुत होगा । शब्दों का अपव्यय ठीक नहीं। ईसुरी के प्रकृत महत्व को अभी हम नहीं समझेंगे। परन्तु आगे चलकर जब लोक- साहित्य के अध्ययन के विषय में पाठकों का सही दृष्टिकोण विकसित होगा और प्रतिभा के मूलतत्व को वैज्ञानिक टॅग से समने की चेष्टा होगी तब हम देखेंगे कि ईसुरी हमारे प्रान्त का एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति था । गत सौ वर्ष के भीतर हमारे यहाँ वैसा कोई पुरुष उत्पन्न नहीं हुआ। हाँ, स्वर्गीय मुंशी अजमेरी उसी कोटि के थे, जिनको हमने अभी तक नहीं पहिचाना।

हमारे पास ईसुरी की एक हजार से अधिक फागें इकड़ी हो चुकी हैं। उनको हम क्रमशः कई भागों में प्रकाशित कर रहे हैं। यहाँ प्रथम भाग पाठकों की भेंट है। फागों को हमने एक क्रम से सजाकर रखने की चेष्टा की है, जिसमें कहीं रस-भंग न हो, और उनकी पाठ-शुद्धि का भी हमने पूरा ध्यान रक्खा है। एक एक फाग को हमने अनेक फगवारों से पूछकर और उनकी शुद्धता की पूरी जाँच करके यहाँ प्रकाशित किया है। इस कार्य में हमें बगौरा के श्रीदेव अहीर, मेंढकी के गयाप्रसादशी पाठक तथा कौनिया के स्व० भूधर तिवारी से बड़ी सहायता मिली है जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। साथ ही पनवाड़ी (हमीरपुर) के श्रीबालाजी उस्तों हरपालपुर के भी सीखी गुप्त, राठ के श्री श्यामसुन्दरजी बादल और रामपुरा (गरौस) के श्रीरघुवर तिवारी के प्रति भी हम अपना विशेष आभार प्रकाशित करते हैं, जिनसे हमें ईसुरी की फागों के संग्रह करने एवं उनके जीवन-वृत्त की खोज में समय समय पर विशेष सहयोग मिलता रहा है।

बुदेलखण्ड में ईसुरी की ये फार्गे चौकड़िया के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि उनमें प्रायः चार कड़ियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पाँच भी देखने में आती हैं। परन्तु बहुत कम । ईसुरी ने ही सबसे पहले इस प्रकार की फागों को जन्म दिया। वे सब 'नरेन्द्र' छंद में बंधी है, जो भारतीय संगीत की रीढ़ है। यह छंद २८ मात्राओं का होता है । १६ और १२ के बीच यति होती है। अंत में गुरु । फागों में केवल इतनी विशेषता है कि प्रथम पंक्ति में १६ मात्राओं के पहले चरण के साथ १२ मात्राओं के दूसरे चरण का अनुप्रास मिला दिया गया है। शेष पंक्तियाँ साधारण नरेन्द्र छंद की भाँति चलती हैं। हमने पाठ की सुविधा की दृष्टि से कहीं-कहीं जान-बूमकर लघु स्वर को दीर्घ लिख दिया है। उसे पाठक छन्दोभंग-दोष न समझें। वे कृपया इस बात का ध्यान रखें कि ये गीत गाने के लिए बने हैं, साधारण कविता की तरह पढ़ने के लिए नहीं । गाकर पढ़ते समय स्वर के उतार चढ़ाव के अनुसार दीर्घ का लघु और लघु का दीर्घ अपने आप मुख से प्रकट होता है। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में बहुधा ईसुरी पर लेख प्रकाशित होते रहते हैं । दुःख की बात है कि वहाँ फागों की पाठ-शुद्धि की ओर लेखकों का ध्यान नहीं जाता। अब तक हमें जितनी भी छुपी फार्गे पढ़ने को मिली हैं उनका पाठ नितान्त अशुद्ध और लेखकों के अनाड़ीपन का 'परिचायक है। अतः ईसुरी के प्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि फार्गों को पाने के पहले थोड़ा परिश्रम करके उनके शुद्ध रूप को स्थिर कर लिया करें।

श्रीमान् ओरछा नरेश को ईसुरी बहुत प्रिय है। ईसुरी का पूरा परिचय हमें उनके निज के संग्रह से ही मिला। हमारे पास जो १००० फागें हैं उनमें ७०० के लगभग उनके संग्रह की हैं। वे ईसुरी की प्रशंसा करते नहीं थकते । इसलिए नहीं कि उसमें भाषा की अनुपम सादगी और लावण्य है. बल्कि इसलिए कि वह बुन्देलखण्ड की जनता का अपना कवि है। उसके द्वारा बुन्देलखण्डी का कंठ मुख- रित हुआ है। उसको काव्य की मधुर वाणी मिली है। उसके विषय में सर्व साधारण में एक दोहा प्रचलित है-

रामायण तुलसी कही, तानसेन ज्यों राग। सोई या कलिकाल में,कही ईसुरी फाग ॥

पाठक इतने से ही अनुमान लगा लें कि बुन्देलखण्ड की ग्रामीण जनता के हृदय में ईसुरी का क्या स्थान है। जिसने यह दोहा कहा, ईसुरी को बढ़ा बताकर तुलसी की अवमानना करना उसका उद्देश्य नहीं था और न तानसेन के राग को ही उसने किसी प्रकार अवज्ञा की दृष्टि से देखा है। उसने तो केवल अपने कवि के प्रति, जिसे उसने अपने हृदय के अधिक निकट पाया, अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित की है। यह ओरखेश की सतत प्रेरणा का परिणाम है कि ईसुरी की ये फार्म जिसके प्रकाशित होने की प्रतीचा एक दीर्घ काल से की जा रही थी इस सुन्दर रूप में पाठकों को पढ़ने के लिए मिल रही हैं। अतः बुन्देलखंड के सभी साहित्य-प्रेमियों के निकट निस्संदेह से हार्दिक प्रशंसा और धन्यवाद के पात्र हैं।

चतुर्थ अध्याय: साहित्य सर्जना

भारत विविधवर्णी लोक संस्कृति से संपन्न, समृद्ध परम्पराओं का देश है, इन परम्पराओं में से एक लोकगीतों की है यदि हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम आदिकालीन साहित्य से होते हुए भक्तिकाल और रीतिकाल तक के साहित्य सृजन पर लोक जीवन गहरी छाप देख सकतें हैं। चाहे वो समाज सुधारक रचनायें हो या प्रकृति चित्रण, ऋतु वर्णन हो, या श्रृंगारपरक रचनायें अथवा धर्म संस्कृति विषयक काव्य ही क्यों ना हो, सभी के मूलाधार के रूप में हम लोक संस्कृति को ही पातें हैं। अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि लोक साहित्य में लोक चित्रण ही प्रधान होता है, निजी अनुभूतियां नहीं यानि लोक साहित्य में लोक जीवन के उस वर्ग का चित्रण रहता है जो अपनी प्राचीन मान्यताओं, विश्वासों और परंपराओं के प्रति आस्थावान है। लोक साहित्य मूलतः लोक की मौखिक अभिव्यक्ति है जो संपूर्ण जीवन का नेतृत्व करती है। लोक जीवन की अभिव्यक्ति को वाणी देना ही लोक साहित्य है।

इत यमुना, उत नर्मदा, इत चंबल, उत टॉस की संस्कृति में रचा बसा बुंदेलखंड भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। इस बुंदेलखंड का अपना एक विशिष्ट लोक साहित्य है जिसे फाग साहित्य कहा जाता है। पर्वराज होली से ही बुंदेलखंड में फागों की बयार बहने लगती है। फाग का उत्स मूलतः श्रृंगार है तथा बुंदेलखंड में श्रृंगारी कवियों की बड़ी लंबी परंपरा रही है, पद्माकर, खुमान कवि, ठाकुर, दामोदर देव, नवलसिंह कायस्थ, प्रताप साहि पजनेश, गदाधर भट्ट, सरदार कवि, भगवंत कवि, गंगाधर व्यास तथा खयालीराम जैसे बुंदेलखंड के श्रृंगारी कवियों ने प्रभूत काव्य रचा। इसी काव्य का एक अंग फाग है। ईसुरी की प्रसिद्धि उनकी फागों के कारण है। फाग परंपरागत लोक संगीत है, जो बुंदेलखंड में प्रचलित रहा है। फाग शब्द की उत्पत्ति फाल्गुन से हुई है। इस माह में जो गीत लोक स्वर में निबद्ध किए जाकर गाए गए, वे फाग कहलाए। फागों के साथ बुंदेलखंड का प्रसिद्ध राई नृत्य पर किया जाता है। बुंदेलखंड में साखी की फाग, झूला की फाग, बुझौवल फाग (प्रश्नोत्तरी फाग), छंदयाऊ फाग, जैसे अनेक फाग प्रचलित रही हैं। बुंदेली फागों के एकछत्र सम्राट हैं लोककवि ईसुरी। ईसुरी ने फागों की एक विशिष्ट शैली 'चौकड़िया फाग को जन्म दिया, और अपनी नैसर्गिक प्रतिभा से ग्रामीण जीवन के मनिभावों को सुर-ताल के साथ समन्वित कर उपेक्षित और अनचीन्हीं लोक भावनाओं को इन फागों में के माध्यम से सजीव कर दिया। अपने समय से लेकर आज तक ईसुरी बुंदेली समाज में उतने ही लोकप्रिय रहे हैं, उनकी रचनाओं को जहां एक ओर आमजन और सुधिजनों द्वारा सराहा अपनाया गया वहीं दूसरी ओर समाज के आलोचक वर्ग ने भी समय-समय पर उनकी रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किये। इस क्रम में किसी ने उनके फागों को आध्यात्मिक कहा, तो किसी ने उनमें शुद्ध श्रृंगारिक तत्व पाये, वहीं कुछ लोग ऐसे भी रहे जिन्होनें ईसुरी के फागों को में व्यक्त "रजऊ" को ईसुरी की प्रेमिका कहकर उनके पदों को अश्लील और अनैतिक तक घोषित कर दिया। ऐसे में यह सवाल भी उठता है कि लोककवि की कविता में लोकतत्व देखा जायें या उसकी निजी अनुभूतियां? निश्चित तौर पर लोक साहित्य तो वही

हुआ जिसमें लोक की अभिव्यक्ति हो। जिसमें लोक की भावनायें समाहित हों, जिसमें लोक परम्पराओं का चित्रण हो, लोक जीवन का चित्रण हो और जो लोक द्वारा मान्य, स्वीकृत और आत्मसात किया गया हो।



वर्तमान में ईसुरी के जीवन को नजदीक से समझने के लिये डीएवी कॉलेज कानपुर में बतौर शिक्षक कार्यरत डॉ. दया दीक्षित का उपन्यास "फाग लोक के ईसुरी" एक महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित हो सकता है, जो ईसुरी के जीवन और काव्य के सम्बंध में स्थापित अनेक मिथक तोड़ता है और साथ ही ईसुरी जीवन को बेहद नजदीक से समझने का अवसर देता है। जिस समाज, संस्कृति के बीच ईसुरी का जन्म हुआ, जिसमें उनका जीवन बीता दरअसल उसी समाज और संस्कृति की झलक हम ईसुरी के काव्य में पाते हैं। उनका काव्य कहीं भी अपने समाज से कटा नहीं है, शायद यही वजह है कि बुंदेलखंड के फाग साहित्य में आज भी ईसुरी की फागे उसी महक के साथ जिंदा है। डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र अपने लेख " बुंदेली जाति का पुरुषार्थ ईसुरी" में लिखते हैं "ईसुरी लोक के कवि हैं। लोक की ही तरह फक्कड, बौडम, उदात्त, कठोर, कोमल, रसवत, अनगढ़, बेफिक्र, मस्तमौला, चंचल आदि। बुंदेली साहित्य में ईसुरी का वही स्थान है जो हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के निर्माण और विकास में भारतेंदु हरिशचंद्र का है।" वे आगे कहते हैं "ईसुरी के मूल्यांकन के लिये हमारा प्रस्थान बिंदु ही गलत होगा तो हम बडी आसानी से ईसुरी को दोयम दर्जे का सिद्ध करने के निष्कर्षों तक पहुंच सकते हैं। हां ईसुरी ने प्रेम और श्रृंगार की सर्वोत्तम फागों की रचना की है लेकिन वह उनकी कविता का एक हिस्सा भर है। बुंदेली जाति में ईसुरी की इतनी सहज स्वीकारोक्ति उनके सम्पूर्ण साहित्य को लेकर है, न कि उनकी श्रृंगारी फागों के कारण।

अपने लेख "लगी हाठ उठ जाने ईसुरी का अध्यात्म" में डॉ. लक्ष्मी पांडे कहती हैं "बुंदेलखंड के जनकवि ईसुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व में स्थापित मान्यताओं के अतिरिक्त अन्य पक्ष भी थे जिनपर चर्चा कम हुई।" वे आगे लिखती हैं "जब ईसुरी अकुंठ सौंदर्य और श्रृंगार की मांसल चित्रात्मक अभिव्यक्ति का अतिरेक करते हैं तो छायावाद के बाद वाला स्मरण हो आता है। इस क्रम में हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि किसी भी कवि की लोकप्रियता के आधार निर्माण में महज उसके काव्य विषय नहीं बल्कि काव्य शैली और काव्य भाषा की भी अहम भूमिका होती है। अतः महज चंद श्रृंगारिक पदों के आधार पर ईसुरी के काव्य पर विचार नहीं किया जा सकता।

बुंदेलखंड के ही सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. श्यामसुंदर दुबे का मानना है कि ईसुरी ठेठ के ठाठ से सजे-सँवरे अपनी निश्छल अभिव्यक्ति में अद्वितीय हो जाते हैं। उनका यह कहना सटीक है। ईसुरी ने रजऊ को लेकर जिन देशज शब्दों और प्रतीकों के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त किया है, वह वास्तव में अपूर्व है। अस्थियों में घुन लगना एक बुंदेली मुहावरा है, लेकिन ईसुरी ने इसे रजऊ के प्रेमचिंतन से जोड़ दिया। एक फाग में उन्होंने कहा-

हड़रा घुन हो गए हमारे, सोच में रजऊ तुम्हारे।
दौरी देह दूबरी हो गई, करकें देख उगारे।

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के अनुसार "ईसुरी ने केवल रजऊ के प्रेम तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने राधा-कृष्ण से लेकर अपने लोक सौंदर्य और देशभक्तों के शौर्य को भी अपनी फागों में जहाँ एक ओर गाया वहीं दूसरी ओर उन्होंने इस संसार की निस्सारता पर भी कबीराना ठाठ के साथ फागें कहीं। नीम के पेड़ की छाया का सुंदर वर्णन करते हुए वे कहते हैं-

सीतल एई नीम की छड़याँ, धामी व्यापत नइयाँ।
धरती न जे छू-छू जायें, है लालौई डरइयाँ।

अर्थात् नीम की छाया बहुत शीतल है। यहाँ धूप नहीं लगती और इसकी हरी-भरी डालियाँ धरती को छू-छू लेती हैं। ईसुरी वृक्षों के रक्षक हैं। उनकी फागों में पर्यावरण के प्रति चिंता भी है। एक फाग में वे वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाने वालों को कहते हैं कि उन पर क्यों कुल्हाड़ी चलाते हो, वे तो मनुष्यों के पालनकर्ता हैं। उनमें इतनी सामर्थ्य है कि वे काल को भी काट देते हैं। उन्हें भूख से रक्षा के लिए भगवान् ने उपजाया है और वे ऐसे हैं कि मृतप्राय लोगों को तरोताजा कर देते हैं-

इनपे लगे कुलरिया घालन,
महुआ मानस पालन।।

ईसुरी के इन तमाम काव्य पदों से गुजरने के बाद लगता है कि वे एक मौलिक कवि थे। मानव जीवन का कोई पक्ष उनके काव्य से अछूता नहीं रहा। कहना सही होगा कि बुंदेलखंड के महानतम लोककवि ईसुरी के काव्य में लोकजीवन के

सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक पक्ष पूरी जीवन्तता और रचनात्मकता के साथ उद्घाटित हुए हैं। ईसुरी का वैशिष्ट्य यह है कि वे तथाकथित संभ्रांतता या पांडित्य से कथ्य, भाषा, शैली आदि उधार नहीं लेते, बल्कि वे देशज ग्रामीण लोक मूल्यों और परम्पराओं को इतनी स्वाभाविकता, प्रगाढ़ता और अपनत्व से अंकित करते हैं कि उसके सम्मुख शिष्टता शालीनता ओढी हुई सृजनधारा विपन्न प्रतीत होने लगती है। यह ईसुरी की भाषिक सहजता, सरलता ही है कि उनका साहित्य पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध ना होने के बावजूद श्रुति परंपरा में रच- बसकर, पीढ़ी दर पीढ़ी सुन-गाकर आज तक तक जीवित है। ईसुरी ने बुंदेली भाषा का इतना सरल और स्वभाविक प्रयोग किया है कि सुनने वाले को कोई शब्द खटकता नहीं अपितु ईसुरी का शब्द संयोजन श्रोताओं की स्मृति में समा जाता है। हालांकि बुंदेलखंड की माटी में केशव और पद्माकर जैसे रससिद्ध कवि हुए हैं किंतु अपनी मातृ भाषा बुंदेली में काव्य सृजन करने वाले ईसुरी ही बुंदेली फग के सच्चे सपूत कहे माने जाते हैं। यह भी विडम्बना है कि अपने राधा कृष्ण सम्बन्धी अपने श्रृंगारिक गीतों के लिये विद्यापति मैथिल कोकिल" कहलाते हैं तो सुजान की याद में काव्य सृजन करने वाले घनानंद "प्रेम की पीर के कवि कहलायें जाते हैं, किंतु अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिये "रजऊ" का सृजन करने से ही ईसुरी के समस्त काव्य को खारिज नहीं किया जा सकता।

ईसुरी के काव्य को उसी व्यापक दृष्टिकोण से देखने, समझनें और परखने की आवश्यकता है जिस व्यापकता में उन्होनें काव्य सृजन किया है, जिस व्यापक 1 दृष्टि कोण से उन्होनें बुंदेलखंड को अपने काव्य में उतारा है। किसी भी संकुचित नजरिये से ईसुरी को देखना, किसी भी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर ईसुरी को – परखना एक लोककवि के साथ अन्याय होगा।

श्यामसुंदर दुबे की पुस्तक ''लोक कवि ईसुरी'' लोक सीमाओं से बाहर निकल कर प्रेम परक भावनाओं के उन्मुक्त आकाश में विचरण करने वाले कवि ईसुरी के समूचे व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक विशिष्ट सिंहावलोकन है। लोक कवि ईसुरी बुंदेलखंड अंचल में निवास करने वाले कवि रहे और उन्होंने बुंदेली में फाग रचनाएं लिखीं। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाएं अपनी प्रेमिका रजऊ को समर्पित करते हुए लिखी हैं। लोक संस्कृति के अध्येता तथा साहित्य मनीषी श्यामसुंदर दुबे ने ईसुरी की रचनाओं के लोक तत्व, सौंदर्य तत्व, अभिव्यक्ति और लोक भक्ति का सांगोपांग अध्ययन, विश्लेषण एवं विवरण प्रस्तुत करते हुए अपनी पुस्तक में अपने कुल आठ दीर्घ लेखों को पिरोया है। पहला लेख है व्यक्तित्व-अंतरीपों की अंतर यात्रा, दूसरा लेख है सौंदर्य पर प्रेम की प्रतीति, तीसरा- अपने समय समाज में, चैथा- लोक भक्ति की झलक, पांचवा- प्रकृति का लोक पक्ष, छठवां- लोक में मृत्यु-अभिप्राय, सातवां- रीतिकाल की लोक व्याप्ति और आठवां- अभिव्यक्ति प्रणाली का अंतर्विश्लेषण।

बुन्देलखण्ड में साहित्य की समृद्ध परम्परा पाई जाती है। इस परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं जनकवि ईसुरी। वे मूलतः लोककवि थे और आशु कविता के लिए सुविख्यात थे। रीति काव्य और ईसुरी के काव्य की तुलना की जाए तो यह बात उल्लेखनीय है कि भारतेन्दु युग में लोककवि ईसुरी को बुन्देलखण्ड में जितनी ख्याति प्राप्त हुई उतनी अन्य किसी कवि को नहीं। ईसुरी की फागें और दूसरी रचनाएं आज भी बुंदेलखंड के जन-जन में लोकप्रिय हैं। ईसुरी की फागें लोक काव्य के

रूप में जानी जाती हैं और लोकगीत के रूप में आज भी गाई जाती हैं। भारतेन्दु युग के लोककवि ईसुरी पं गंगाधर व्यास के समकालीन थे और आज भी बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। ईसुरी की रचनाओं में ग्राम्य संस्कृति एवं सौंदर्य का वास्तविक चित्रण मिलता है। उनकी ख्याति फाग के रूप में लिखी गई रचनाओं के लिए है। ईसुरी की रचनाओं के माध्यम से उनकी योग्यता, व्यावहारिक ज्ञान का बोध होता है। ईसुरी की रचनाओं में बुन्देली लोक जीवन की सरसता, मादकता, सरलता और रागयुक्त संस्कृति की झलक मिलती है। ईसुरी की रचनाएं जीवन, श्रंृगार, सामाजिक परिवेश, राजनीति, भक्तियोग, संयोग, वियोग, लौकिकता आदि पर आधारित हैं। यह कहा जा सकता है कि ग्राम्य संस्कृति का पूरा इतिहास केवल ईसुरी की फागों में मिलता है। उनकी फागों में प्रेम, श्रृंगार, करुणा, सहानुभूति, हृदय की कसक एवं मार्मिक अनुभूतियों का सजीव चित्रण है। अपनी काल्पनिक प्रेमिका रजऊ को संबोधित करके लिखी गई रचनाओं के लिए ईसुरी को आलोचना और लोकनिंदा का सामना भी करना पड़ा।

मानव मन की बाह्य प्रवृत्ति-मूलक प्रेरणाओं से जो कुछ विकास हुआ है उसे सभ्यता कहा जाता है और उसकी अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से जो कुछ बना है, उसे संस्कृति कहा जाता है। लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामूहिक पहचान है। इन सबकी मिलीजुली संस्कृति, लोक संस्कृति कहलाती है। किसी क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों के पारस्परिक धर्म त्योहार, पर्व, रीति ,रिवाज, मान्यताओं, कला आदि को लोक संस्कृति का नाम दिया जाता है। लोक संस्कृति किसी क्षेत्र विशेष को अन्य क्षेत्रों से स्वतंत्र पहचान प्रदान करती है। किसी भी कवि का लोककवि हो जाना बड़े गर्व की बात हो सकती है। वह मूलतः ध्वजवाहक होता है अपने लोक की संस्कृति का। लेकिन इसमें जो सबसे बड़ा संकट है, वह है कवि का नाम विलोपित हो जाना। जब कोई रचना लोक में प्रचलित हो जाती है तो वह एक मुख से दूसरे मुख आते-जाते उन व्यक्तियों की प्रस्तुति बन जाती है। मूल कवि का नाम विस्मृत होने लगता है और एक लोक वचन की भांति वह रचना जन-जन में प्रवाहित होती रहती है। अपने पहले लेख ''व्यक्तित्व: अंतरीपों की अंतर्यात्रा'' में श्यामसुंदर दुबे लिखते हैं कि ''लोक साहित्य में आत्मा व्यंजना की गुंजाइश खूब रहती है किंतु कवि-पहचान इसमें विलोपित हो जाती है। लोक साहित्य की अनेक विशेषताओं के साथ यह एक विशेषता जुड़ी है कि लोक साहित्य का रचयिता अनाम होता है, उसमें रचनाकार का नाम-धाम नहीं रहता है और इस आधार पर यह निश्चित कर लिया जाता है कि लोग कविता की रचना सामूहिक प्रतिभा का परिणाम है लेकिन यह सर्वथा सत्य नहीं है। रचना किसी एक के द्वारा ही की जाती है भले ही बाद में उसमें कुछ अन्य रचनाकारों का योगदान संभव होता रहा है। लोक में व्यक्ति केंद्रियता विगर्हणीय रही है। उसकी सामूहिकता ही उसकी पहचान रही है। लोक में ग्राम्य में धारणा का ही अर्थ है- समूह का जीवन''

ईसुरी एक लोक कवि थे। फिर भी उनकी रचनाएं लोककाव्य की ख्याति पाते हुए भी अपने कवि के नाम से अलग नहीं हुईं। ईसुरी के काव्य और उसके देशकाल पर प्रकाश डालते हुए लेखक श्याम सुंदर दुबे ने लिखा है-''ईसुरी की कविता लोक कविता के उस संधि स्थल की कविता थी, जहां कविता व्यक्ति केन्द्रित रचना के रूप में अपनी पहचान बनाने लगी

थी। कविता में कविगणों के नाम की छाप का प्रयोग होने लगा था। एक तरह से यह लोककाव्य की वह उछाल थी जिसमें वह अपनी लोकधर्मिता से अलग होने की कोशिश में रत हो रहा था।'' लेखक ने आगे लिखा हैं कि-''ईसुरी के व्यक्तित्व की छाप उनकी कविता में स्पष्ट हो रही थी।''

''सौदर्यपरक प्रेम की प्रतीति''-यह पुस्तक का दूसरा लेख है जिसमें लेखक श्याम सुंदर दुबे ने ईसुरी के काव्य के सौदर्यपरक पक्ष को रेखांकित किया है। वे लिखते हैं कि –''ईसुरी की कविता क्रियाबिंबों की कविता है। वे बुंदेली व्यक्ति की सतत क्रिया विधि को अपनी कविता में ढालते हैं। उनकी कविता इसलिए स्थिर बिंबों के निर्माण में रुचि नहीं लेती है। एक चलित ऊर्जा काइनेटिक एनर्जी से परिचालित हो कर उनकी कविता बुंदेली चमक-दमक, बुंदेली ठस-मसक, बुंदेली लहक-चहक की धूप-छांही उजास फेंकती है। उनकी कविता केलेडिलक स्कोप जैसे दृश्यांकन निर्मित करती है। केलेडिलक स्कोप को ज़रा-सा घुमाया कि उसके आभ्यांतर की सौंदर्यसृष्टि परिवर्तित हो जाती है। ईसुरी की कविता का विलक्षण सौंदर्य चक्र इसी

ईसुरी के काव्यसौंदर्य का लेखक ने उदाहरण दिया है-

अंखियां जब काऊ से लगतीं, सब-सब रातन जगतीं

झपतीं नईं झीम न आवै, कां उस नींदी भगतीं

बिन देखे वे दरद दिमानी, पके खता-सी दगतीं

ऐसो हाल होत है ईसुर, पलक न पल तर दबतीं

तरह के अपरूपों की रम्य रचना करता है।''

ईसुरी के काव्य में प्रेम का एक ऐसा लोकाचारी रूप मिलता है जो सांस्कृतिक परम्पराओं का सुंदरता के साथ निर्वहन करता है किन्तु वर्जनाओं को तोड़ता भी चलता है। ''अपने समय-समाज में'' लेख में लेखक ने सामाजिक संदर्भ में ईसुरी की प्रेमाभिव्यक्ति का विश्लेषण किया है। लेखक ने लिखा है –''ईसुरी का प्रेम-लोक अनुभूतियों के अनन्त विसतार वाला है। लोक की सीमित सामथ्र्य का दिगंतव्यापी प्रयोग ईसुरी अपनी इस प्रेम साधना के आधार पर करते हैं। ईसुरी का जीवन जिन घटनाओं का समुच्चय रहा है उनमें उनका प्रेमी व्यक्तित्व ही केन्द्र में है।'' लेखक ने उदाहरण देते हुए आगे लिखा है-''रजऊ की लगन ने उन्हें जिस विपरीत के समक्ष ला खड़ा किया, वह प्राणों की संासत का प्रामाणिक अनुभव है।''

जा भई दशा लगन के मारें रजऊ तुमारे द्वारे
जिन तन फूल छड़ी न छूटी, तिनें चलीं तलवारें
हम तो टंगे नींम की डरियां, रजुआ करें बहारें
ठाड़ी हती टिकी चैखट से, अब भई ओट किवारें
कर का सकत अकेलो ईसुर सबरू गाज उतारें

लेखक श्यामसुंदर दुबे ने ईसुरी के काव्य में ''लोकभक्ति की झलक'' को भी निरूपित किया है। वस्तुतः लोक वह सर्वव्यापी सत्ता है जिसका निर्माण स्वयं मनुष्य ने किया है और जिसे वह अपने अस्तित्व के रूप में ढालने का सतत प्रयास करता रहता है। लोक में उपस्थित सारे मनुष्यों के सारे प्रयास लोक को विविधरंगी बना देते हैं और सौंदर्य की एक अलग परिभाषा गढ़ते हैं। इसमें भक्ति, व्रत-उपवास, पूजापाठ, तीर्थयात्रा से ले कर योग-आराधना तक शामिल होती है। जहां तक ईसुरी के काव्य में लोकभक्ति का प्रश्न है तो श्यामसुंदर दुबे मानते हैं कि –''ईसुरी की भक्तिपरक कविताओं में शीर्ष स्थान राधा का है। वे राधा को ही जैसे अपना इष्ट मानते हैं।'

पंचम अध्याय

ईसुरी के भाग में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन

बुंदेलखंड के लोकप्रिय और समर्थ कवि ईसुरीप्रसाद जो फाग के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी रचना "ईसुरी की भाग" है जिसका शोधार्थी द्वारा सम्यक प्रकार से अध्ययन कर विशिष्ट शैक्षिक एवं मूल्यपरक कुछ पद्यों को छांटा गया जिनका विवरण प्रासंगिकता सहित निम्नलिखित वर्णित है —

5.1 राम नाम ही सच्चा है

लै बौ राम नाम है सच्चा! लगै न जम कौ दच्चा! बरत अगन तें कूँदत आएँ मारजार के बच्चा ॥
हिरनाकुस प्रहलाद के लाने, कौन तमासौ रच्चा ॥ 'ईसुर' लै लै नाम उतर गए, मीरा, दोला, फज्जा ॥



व्याख्या– 'राम' नाम लेना ही सार है-सही है। इससे यम के धक्के नहीं लगते। जलती आग में से बिल्ली के बच्चे कूदते फाँदते 'राम' नाम के प्रताप से जीवित निकल आए। हिरनाकुस और प्रह्लाद के लिए प्रभु ने कैसी माया रची थी! अरे ईसुरी ! नाम ले ले कर मीरा, दोला, फच्चा आदि भक्त तर गए।

मन तें काय भजत ना रामें! आय आखिरी कामें!
सुआ पढ़ावत गनका तर गइ, सोंरी लेतन नामें ॥
नाम लेत रैदास चले गए चला चाम के दामें ॥
अपने जन को बेड़ निबाउत, पठै देत सुरधामें ॥
तें नइ भजत 'ईसुरी', जानें तीय नरक के गायें



व्याख्या—अरे मन ! तू राम को क्यों नहीं भजता ? आख़िर में वही काम आताहै। गणिका तोते को राम नाम सिखाने और शबरी नाम जपने से तर गई। नाम से रैदास का उद्धार हुआ और उनका चमड़े का सिक्का तक चला। वे अपने भक्तों की बात निभाते हैं और उन्हें स्वर्ग में स्थान देते हैं। अरे ईसुरी! तू उन्हें नहीं भजता । तुझे नरक के गाँव।

जी के रामचंद रखवारे! को कर सकत दगा रे!

घर नरसिंग रूप कड़ आए, हिरवाकुस खों मारे ||

राना ज़हर दऔ मीरा खों, पीतन प्रान समारे ॥

मसकी उतै ग्राह की गरदन, झट गजराज उबारे॥

'ईसुर' बचा लई है उनने, सिर से गाज हमारे ॥

व्याख्या–

राम जिसके रखवाले हैं, उसके साथ कौन दग़ा कर सकता है? उन्होंने (भक्त के लिए) नृसिंह रूप रखा और हिरनाकुस का वध किया था। राणा ने मीरा को जहर दिया, किंतु पीते ही उसके प्राण उन्हीं ने बचाए। उधर उन्होंने ग्राह की गरदन घोंट कर गजराज की तुरंत रक्षा की। उन्हीं ने 'ईसुरी' के सिर से वज्राघात को बचाया था।

प्रासंगिकता

राम की महिमा अपरम्पार है। राम खुद कह गए राम से बड़ा राम का नाम। तो जो बात स्वयं राम कह गए वो कैसे गलत हो सकती है। दरअसल, जीवन का आधार ही राम नाम है। हर जगह राम नाम की महिमा का गुणगान है। राम सिर्फ एक नाम नहीं है। राम नाम तो सबसे बड़ा मन्त्र है। राम नाम की महिमा तो ये है की सदाशिव भोले शंकर भी राम नाम जपते रहते हैं। इसी नाम का वो हर प्रहर जाप करते रहते है। संसार चल ही राम नाम से रहा है। सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु सभी में जो शक्ति है वो सब राम नाम की है।



राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे।

सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने ॥

इस मंत्र को श्री राम तारक मंत्र भी कहा जाता है। और इसका जाप, सम्पूर्ण विष्णु सहस्त्रनाम या विष्णु के 1000 नामों के जाप के समतुल्य है। यह मंत्र श्री राम रक्षा स्तोत्रम् के नाम से भी जाना जाता है।

सम्वन्धित कथा:



एक बार भूतभावन भगवान शिव ने अपनी प्राणवल्लभा पार्वती जी से अपने ही साथ भोजन करने का अनुरोध किया। भगवती पार्वती जी ने यह कहकर टाला कि वे विष्णुसहस्रनाम का पाठ कर रही हैं। थोड़ी देर तक प्रतीक्षा करके शिवजी ने जब पुनः पार्वती जी को बुलाया तब भी पार्वती जी ने यही उत्तर दिया कि वे विष्णुसहस्रनाम के पाठ के विश्राम के पश्चात् ही आ सकेंगी। शिव जी को शीघ्रता थी। भोजन ठण्डा हो रहा था। अतः भगवान भूतभावन ने कहा- पार्वति! राम राम कहो। एक बार राम कहने से विष्णुसहस्रनाम का सम्पूर्ण फल मिल जाता है। क्योंकि श्रीराम नाम ही विष्णु सहस्रनाम के तुल्य है। इस प्रकार शिवजी के मुख से राम इस दो अक्षर के नाम का विष्णुसहस्रनाम के समान सुनकर राम इस द्व्यक्षर नाम का जप करके पार्वती जी ने प्रसन्न होकर शिवजी के साथ भोजन किया।

महिमा राम नाम की - प्रेरक कहानी



एक आदमी बर्फ बनाने वली कम्पनी में काम करता था. एक दिन कारखाना बन्द होने से पहले अकेला फ्रिज करने वाले कमरे का चक्कर लगाने गया तो गलती से दरवाजा बंद हो गया। और वह अंदर बर्फ वाले हिस्से में फंस गया छुट्टी का वक़्त था और सब काम करने वाले लोग घर जा रहे थे। किसी ने भी अधिक ध्यान नहीं दिया की कोई अंदर फंस गया है।वह समझ गया की दो-तीन घंटे बाद उसका शरीर बर्फ बन जाएगा अब जब मौत सामने नजर आने लगी तो, भगवान को सच्चे मन से याद करने लगा। अपने कर्मों की क्षमा मांगने लगा और भगवान से कहा कि प्रह्लाद को तुमने अग्नि से बचाया, अहिल्या को पत्थर से नारि बनाया, शबरी के जुठे बेर खाकर उसे स्वर्ग में स्थान दिया। प्रभु अगर मैंने जिंदगी में कोई एक काम भी मानवता व धर्म का किया है तो तूम मुझे यहाँ से बाहर निकालो। मेरे बीवी बच्चे मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। उनका पेट पालने वाला इस दुनिया में सिर्फ मैं ही हूँ। मैं पुरे जीवन आपके इस उपकार को याद रखूंगा और इतना कहते कहते उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे।एक घंटे ही गुजरे थे कि अचानक फ़्रीजर रूम में खट खट की आवाज हुई। दरवाजा खुला चौकीदार भागता हुआ आया। उस आदमी को उठाकर बाहर निकाला और गर्म हीटर के पास ले गया। उसकी हालत

कुछ देर बाद ठीक हुई तो उसने चौकीदार से पूछा, आप अंदर कैसे आए? चौकीदार बोला कि साहब मैं 20 साल से यहां काम कर रहा हूं। इस कारखाने में काम करते हुए हर रोज सैकड़ों मजदूर और ऑफिसर कारखाने में आते जाते हैं। मैं देखता हूं लेकिन आप उन कुछ लोगों में से हो, जो जब भी कारखाने में आते हो तो मुझसे हंस कर राम राम करते हो और हालचाल पूछते हो और निकलते हुए आपका राम राम काका कहना मेरी सारे दिन की थकावट दूर कर देता है। जबकि अक्सर लोग मेरे पास से यूं गुजर जाते हैं कि जैसे मैं हूं ही नहीं।

आज हर दिनों की तरह मैंने आपका आते हुए अभिवादन तो सुना लेकिन राम राम काका सुनने के लिए इंतज़ार करता रहा। जब ज्यादा देर हो गई तो मैं आपको तलाश करने चल पड़ा कि कहीं आप किसी मुश्किल में ना फंसे हो। वह आदमी हैरान हो गया कि किसी को हंसकर राम राम कहने जैसे छोटे काम की वजह से आज उसकी जान बच गई।

5.2 मनुष्य जन्म का महत्व

मानुस बड़े भाग से होबै ! रजउ छोड़ दो लोबै!
मिलके चाल चलौ दुनिया में, सब से राख घरोबै ॥
जिंदगानी को कौन भरीसौ, जुबन जात रँए रोबै ॥
भरेतला में सपरत 'ईसुर' नंगी कहा नि चौबे ॥

व्याख्या–

मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है। अरी रजउ, लोभ करना त्यागो। दुनियाँ में हिलमिल कर चाल चलो। सबसे पारिवारिकता बनाओ। जीवन का क्या ठिकाना ? यौवन बीतने पर रोना पड़ता है। 'ईसुरी' तो भरे तालाब में नहाता है। वह तो नंगा है और उसके पास निचोड़ने को कुछ नहीं।

तन कौ तनक भरोसौ नइयाँ ! राखै लाज गुसइयाँ !
तरवर पत्र गिरै धरनी में, फिर ना लगत डरइयाँ ||
जर बर देह मिले माटी में चुनें न राख चिरइयाँ ॥
जा नरदेही काम न आवै, पसु की बनें पनइयाँ ॥

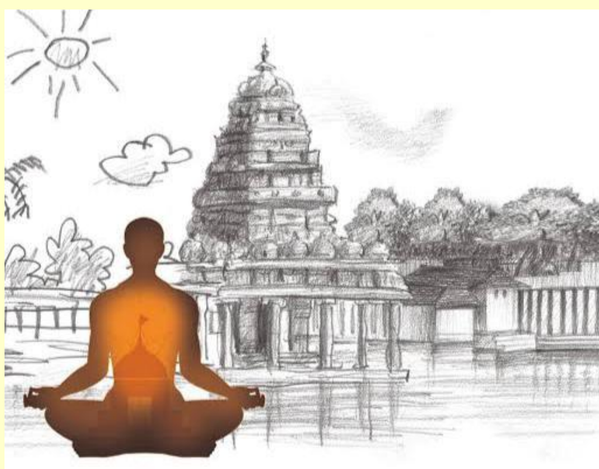
व्याख्या—

इस शरीर का तनिक भी भरोसा नहीं। भगवान ही लाज रखे। पेड़ से पत्ता गिरने पर फिर डाल पर नहीं लगता। देह जलकर मिट्टी में मिल जाती है तो उसकी राख चिड़ियाएँ भी नहीं चुनती। मानव-देह कुछ काम नहीं आती, पशु की खाल से जूते तो बन सकते हैं।

प्रासंगिकता

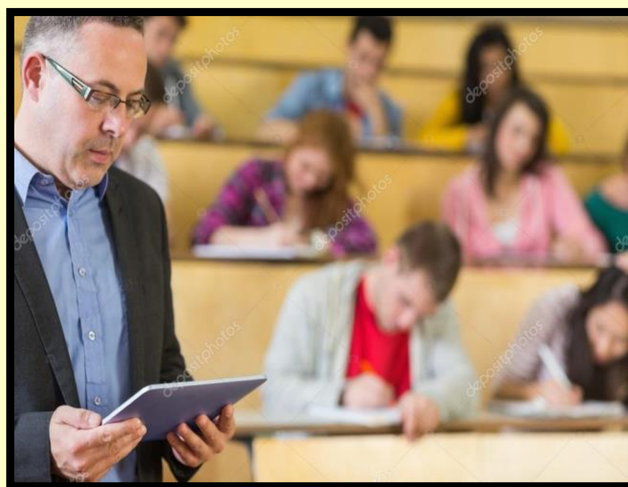
मनुष्यदेह में आने के बाद अन्य गतियों में जैसे कि देव, तिर्यंच अथवा नर्क में जाकर आने के बाद फिर से मनुष्य देह प्राप्त होता है। और भटकन का अंत भी मनुष्य देह में से ही मिलता है। यह मनुष्यदेह जो सार्थक करने आया तो मोक्ष की प्राप्ति हो सके ऐसा है और नहीं आए तो भटकने का साधन बढ़ा दे, वैसा भी है!

दूसरी गतियों में केवल छूटता है। इसमें दोनों ही हैं। छूटता है और साथ साथ बंधता भी है। इसलिए दुर्लभ मनुष्यदेह प्राप्त



हुआ है, तो उससे अपना काम निकाल लो। अनंत अवतार आत्मा ने देह के लिए बिताए। एक अवतार यदि देह आत्मा के लिए निकाले तो काम ही हो जाएगा। मनुष्यदेह में ही यदि ज्ञानी पुरुष मिलें तो मोक्ष का उपाय हो जाए। देवता भी मनुष्यदेह के लिए तरसते हैं। ज्ञानी पुरुष से भेंट होने पर, तार जुड़ने पर, अनंत जन्मों तक शत्रु समान हुआ देह परम मित्र बन जाता है! इसलिए, इस देह में आपको ज्ञानी पुरुष मिले हैं, तो पूरा-पूरा काम निकाल लो। पूरा ही तार जोड़कर तड़ीपार उतर जाओ। एक बार फिलोसॉफी की क्लास में एक प्रोफेसर प्रवेश करते है। उनके साथ में एक कांच का जार, कुछ पत्थर, कंकड़ और कुछ बालू भी थी। प्रोफेसर के प्रवेश करते ही सभी ने अभिवादन किया।

प्रेरक प्रसंग— **प्रोफेसर ने बताया की आज क्लास में अन्य क्लास की अपेक्षा कुछ खास सीखने को मिलेगा।**



विद्यार्थी खुश एवं एक्ससिटेड थे, आज कुछ सीखने को मिलेगा। प्रोफेसर अब खाली ज़ार में पत्थरों को भरना शुरू किया, जब तक जार भर नही गया। जार भरने पर प्रोफेसर ने विद्यार्थियों से पूछा- "क्या जार भर गया"? सभी ने हाँ में उत्तर दिया। अब प्रोफेसर ने कंकडों को जार में डालना शुरू किया, साथ ही साथ जार को हिलाया भी, जिससे पत्थरों के बीच मे कंकड़ अपना रास्ता आसानी से बना पाए। जब जार भर गया तो दोवारा प्रोफेसर ने विद्यार्थियों से पूछा- "क्या अब जार पूरा भर गया?" इस पर दोबारा विधार्थितो ने हाँ में जवाब दिया। अब प्रोफेसर ने उसमे बालू के कण डालने आरम्भ किये, बालू के कण अपना रास्ता बनाते हुए उस जार में प्रवेश कर गये। प्रोफेसर के दोबारा पूछने पर विद्यार्थियों में कहा "अब जार पूर्ण रूप से भर गया है"।

ऐसा सुनकर प्रोफेसर ने पानी लेकर उस ज़ार में उड़ेल दिया। वह भी उसमें समा गया। प्रोफेसर ने विद्यार्थियों को समझाते हुए बताया, कि आपको अपने जीवन में प्राथमिकता को सेट करना होगा। जिंदगी भी एक कांच के ज़ार की तरह है, जिसमे सबसे जरूरी पत्थर है, क्योंकि पत्थर से अभिप्राय आपके परिवार, चरित्र और स्वास्थ्य

है, जबकि कंकड़ आपकी नौकरी एवं अन्य आवश्यकता है तथा बालू हमारे जीवन की छोटी-छोटी ज़रूरतों का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए यदि हम अपने जीवन रूपी जार में पहले बालू भर देंगे तो बाकी चीजों के लिए जगह नहीं बचेगी। इसलिए आपके जीवन में जो सबसे ज्यादा जरूरी है, उसे ज्यादा महत्व और समय दें।

कहानी से शिक्षा

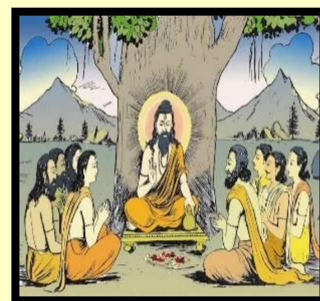
जीवन की ज़रूरतों की प्राथमिकता को समझें। जो जीवन के लिए सबसे ज्यादा जरूरी हो, पहले उसी में फोकस करें। समय बचने पर बाकी चीजें बाद में करें। चीजों में संतुलन बनाने में सफल होने वाले ही कामयाब लोग कहलाते हैं।

5.3 मीठी वाणी सबको प्रिय

सब सौं बोली मीठी बानी ! थोरी हैं जिंदगानी !
जेइ बानी सुर लोक पठावै, जेई नरक निसानी ॥
जे बानी हाती चड़वाबै, जेई उतारै पानी ॥
जेई बानी सों तरे 'ईसुर' बड़े बड़े मुनि ज्ञानी॥

व्याख्या—

सबसे मीठी वाणी बोलो। यह जीवन थोड़ा है। हमारी यही वाणी स्वर्ग का सुख देती है और यही नरक की यातना। अच्छी कहने वाले हाथी पर बैठाए जाते हैं। बुरी बातों से पानी उतर जाता है। अरे ईसुरी, इसी वाणी ने बड़े-बड़े ऋषि मुनियों को तार दिया।



प्रासंगिकता

वाणी बोलने से हमें शांति मिलती है। हमारे अंदर किसी तरह का छल कपट नहीं होता है। जब हम मीठी वाणी बोलते हैं तब हमारा कोई भी दुश्मन नहीं होता है। सभी हमसे प्रेम करते हैं और हमारा सम्मान करते हैं। जो व्यक्ति दूसरे से क्रोध करता है उससे कठोर वाणी बोलता है वह कभी भी सुखी नहीं रहता है, उसका दिल कभी भी शांत नहीं रहता है। वह सदैव परेशान रहता है।

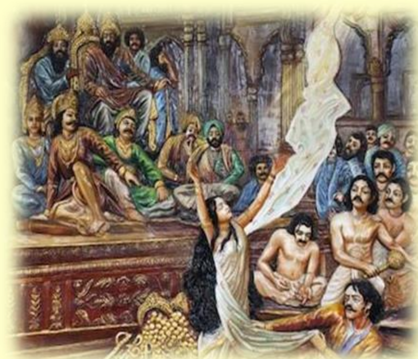
प्रेरक प्रसंग—किसी नगर में एक वीतरागी साधु कुछ शिष्यों के साथ रहते थे। उनकी वाणी अत्यंत मधुर थी और आचरण शुद्ध व सात्विक था। लोग उनके पास से संतुष्ट व प्रसन्न होकर जाते थे। एक दिन एक व्यापारी साधु के पास आया। वह बहुत क्रोध में था। उसका इकलौता पुत्र घर छोड़कर साधु के आश्रम में आ गया था।



उसने आते ही साधु पर अपशब्दों की बौछार शुरू कर दी- क्रआपके पाखंड ने मेरे पुत्र को बहका दिया है। अपने इस ढोंग को बंद कर दो अन्यथा आपके आश्रम को तहस-नहस कर दूंगा।ञ्ज इस तरह वह साधु को दुर्वचन कहता रहा, किंतु साधु के चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं आई। वे मौन रहकर मुस्कराते रहे। यह देखकर व्यापारी को और अधिक गुस्सा आया। अंतत: जब वह बोलते हुए थक गया तो कुछ देर रुका। तब साधु ने कहा, क्रक्या तुम यह जानते हो कि जो शब्द व्यक्ति के मुंह से निकलता है, वह बाहर आने से पूर्व उसकी की जिह्वा का स्पर्श करता है? कटु शब्द दूसरों पर जैसा भी प्रभाव डाले, किंतु पहले बोलने वाले के मुंह को ही कड़वा कर देता है। क्या तुम्हारा मुंह कसैला हो रहा है? व्यापारी ने पाया कि उसकी जिह्वा पर वास्तव में कसैला स्वाद था। साधु ने फिर कहा, क्क्रोध की अग्नि पहले क्रोध करने वाले को ही जलाती है। तुम अपनी दशा देखो और अपने पुत्र को देखो। व्यापारी ने खिड़की के बाहर आश्रम के बगीचे में हंसकर मस्ती में गीत गाते हुए काम करते पुत्र को देखा। फिर क्या था, व्यापारी के मन का विकार दूर हो गया और साधु के स्नेह ने उसे भी आश्रम का सदस्य बना दिया। मधुर वाणी आत्मा को तृप्त करती है, जबकि कटु वाणी स्वयं सहित सभी को संतप्त करती है। अत: हमेशा मीठा बोलना चाहिए।

5.4 भक्तों में बसते भगवान

जिन खों दीन द्रोपदी रोई ! सुनें कृष्ण जाँ हो ।
पाँच भइया मौन बैठ गए, पांडव राज घरोई ॥
सई न गई गुपाल लाल खाँ, गर्व गरूरी खोई ॥
'ईसुर' बचा लाज लई उनने, वे चाहें सो सोई ॥



व्याख्या—द्रोपदी ने आर्त्तवाणी में रोकर पुकारा- कृष्ण जहाँ भी हों मेरी पुकार सुनें। पांडव राजा पाँचों भाई तो मौन बैठे रहे पर गोपाल कृष्ण से यह न सहा गया। उन्होंने आकर दुःशासन का गर्व चूर किया और द्रोपदी की लाज बचाई। अरे ईसुरी! जो वे चाहें वही होता है।

जी के रामचंद रखवारे! को कर सकत दगा रे!

घर नरसिंग रूप कड़ आए, हिरवाकुस खों मारे ||

राना ज़हर दऔ मीरा खों, पीतन प्रान समारे ॥

मसकी उतै ग्राह की गरदन, झट गजराज उबारे॥

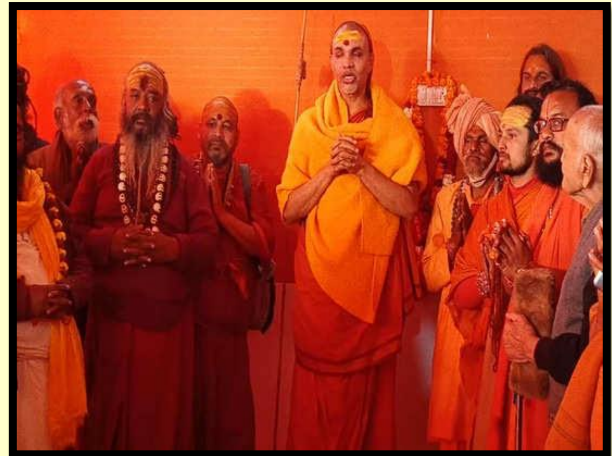
'ईसुर' बचा लई है उनने, सिर से गाज हमारे ॥



व्याख्या— राम जिसके रखवाले हैं, उसके साथ कौन दग़ा कर सकता है? उन्होंने (भक्त के लिए) नृसिंह रूप रखा और हिरनाकुस का वध किया था। राणा ने मीरा को जहर दिया, किंतु पीते ही उसके प्राण उन्हीं ने बचाए। उधर उन्होंने ग्राह की गरदन घोंट कर गजराज की तुरंत रक्षा की। उन्हीं ने 'ईसुरी' के सिर से वज्राघात को बचाया था।

प्रासंगिकता

संत एक साथ रहते थे। दोनों की भक्ति का तरीका अलग-अलग था। एक संत दिनभर तपस्या और मंत्र जाप करते रहता था। जबकि दूसरा संत रोज सुबह-शाम पहले भगवान को भोग लगाता और फिर खुद भोजन करता था। एक दिन दोनों के बीच झगड़ा होने लगा कि बड़ा संत कौन है? इस दौरान वहां नारद मुनि पहुंच गए। नारद ने दोनों संतों से पूछा कि किस बात के लिए लड़ाई कर रहे हैं? संतों ने बताया कि हम ये तय नहीं कर पा रहे हैं कि दोनों में बड़ा संत कौन है? नारद ने कहा



कि ये तो छोटी सी बात है, इसका फैसला मैं कल कर दूंगा। अगले दिन नारद मुनि ने मंदिर में दोनों संतों की जगह के पास हीरे की एक-एक अंगूठी रख दी। पहले तप करने वाला संत वहां पहुंचा उसने एक अंगूठी देखी और चुपचाप उसे अपने आसन के नीचे छिपाकर मंत्र जाप करने लगा। कुछ देर में दूसरा संत भगवान को भोग लगाने पहुंचा। उसने भी हीरे अंगूठी देखी, लेकिन उसने अंगूठी की ओर ध्यान नहीं दिया। भगवान को भोग लगाया और खाना खाने लगा। उसने अंगूठी नहीं उठाई, उसके मन में लालच नहीं जागा, क्योंकि उसे भरोसा था कि भगवान रोज उसके लिए खाने की व्यवस्था जरूर करेंगे। कुछ देर बाद वहां नारदजी आ गए। दोनों संतों ने पूछा कि अब आप बताएं कि हम दोनों में बड़ा संत कौन है? नारद ने तपस्या करने वाले संत को खड़े होने के लिए कहा, जैसे ही वह संत खड़ा हुआ तो उसके आसन के नीचे छिपी हुई अंगूठी दिख गई। नारद मुनि ने उससे

कहा कि तुम दोनों में भोग लगाकर खाना खाने वाला संत बड़ा है। तपस्या करने वाले संत में चोरी करने की बुरी आदत है, उसने भक्ति के समय में भी चोरी करने से संकोच नहीं किया, जबकि भोग लगाने वाले संत ने अंगूठी की ओर ध्यान तक नहीं दिया। इस कारण वही संत बड़ा है।

प्रसंग की सीख

इस प्रसंग की सीख यह है कि भक्ति तभी सफल होती है, जब भक्त के मन में बुरे विचार न हों, भक्त बुरे काम न करता हो। जिस भक्त के विचार पवित्र हैं और जो बुरे कामों से दूर रहता है, सिर्फ उसे ही भगवान की कृपा मिलती है।

5.5 राम में रमण

रसना राम कौ नाम नगीना ! मन मुदरी में दीना !
नियत निबान खान से खोदी, ऐसौ थान कहीं ना ॥
देत उदोत जीत जैपुर की, चड़ी भजन की मीना ॥
दिन दिन देत देह खों दीपक, कभऊँ न होत मलीना॥

व्याख्या—

अरी जीभ ! राम का नाम अनमोल नगीना है। इसे मन की मुद्रिका में जड़ा जाता है। यही नियति को निभाता है (भाग्य को चमकाता है) इसे अलौकिक खान से निकाला है। यह अलभ्य है। इसमें जयपुरी रत्नों की चमक है और भजन भक्ति की मीनाकारी (कारीगरी) है। यह दिन प्रतिदिन देह को दिव्य प्रकाश देता है और कभी मलिन नहीं होता।

रसना काय न राम रस पीती !परबै धार अचीती !
बिसरी खबर तोय वा दिन की, जा दिन बात कई ती ॥
खट रस भोजन पान करत है, फिर रीती की रीती ॥
'ईसुर' भजन राम को करना, जेइ जगत की रीती ॥

व्याख्या—

अरी जीभ ! राम का रस क्यों नहीं पीती ? देख, अनंत रस-धार पड़ रही है। तुझे उस दिन की याद भूल गई, जब यह बात कही थी । तू तो षटरस भोजन और पान कर रीती की रीती रहती है। अरे ईसुरी । राम भजन करना ही जगत की सही रीति है।

रसना राम राम नित कौरी !फिरत पाप खों दौरी !
सवरौ बदन बाम खों धावै, नाम खों बँढ़ता दतौरी ॥
नरकन नफा बाम में पावत, नामें करत ठगौरी ॥
'ईसुर' नाम बाम में भूलत, तें भ्रम भूत भगौरी ॥

व्याख्या—

जीभ ! रोज़ राम राम कह । तू पाप के लिए दौड़ी फिरती है। नारी के लिए तो (मनुष्य) मुँह फाड़े दौड़ता

है और राम नाम के लिए दाँत भिंच जाते हैं। नारी से तो नरक का लाभ (दुख) मिलता है। तू नाम से छल करता है। हे ईसुरी, नारी के पीछे तेरी जीभ नाम को भुलाए फिरती है। अरे तू! भ्रम का भूत भगा !

प्रासंगिकता

ये संसार राममय हैं कण कण में राम समाया हुआ है 'तुलसीदासजी' ने रामचरितमानस में लिखा है "सिया राम मई सब जग जाना" इस जीभ का कार्य केवल स्वाद लेना ही नहीं है साथ में राम नाम रूपिनरस का स्वाद भी लेना है।

प्रेरक प्रसंग— एक सन्यासी घूमते-फिरते एक दुकान पर आये, दुकान मे अनेक छोटे-बड़े डिब्बे थे, एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए..सन्यासी ने दुकानदार से पूछा: इसमे क्या है?

दुकानदारने कहा: इसमे नमक है!

सन्यासी ने फिर पूछा: इसके पास वाले मे क्या है?

दुकानदार ने कहा: इसमे हल्दी है!

इसी प्रकार सन्यासी पूछते गए और दुकानदार बतलाता रहा, अंत मे पीछे रखे डिब्बे का नंबर आया...

न्यासी ने पूछा: उस अंतिम डिब्बे मे क्या है? दुकानदार बोला: उसमे राम-राम है सन्यासी ने पूछा: यह राम-राम किस वस्तु का नाम है! दुकानदार ने कहा: महात्मन! और डिब्बों मे तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं, पर यह डिब्बा खाली है, हम खाली को खाली नही कहकर राम-राम कहते हैं! संन्यासी की आंखें खुली की खुली रह गई! ओह, तो खाली मे राम रहता है! भरे हुए में राम को स्थान कहाँ? लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी बातों से जब दिल-दिमाग भरा रहेगा तो उसमें ईश्वर का वास कैसे होगा? राम यानी ईश्वर तो खाली याने साफ-सुथरे मन मे ही निवास करता है! एक छोटी सी दुकान वाले ने सन्यासी को बहुत बड़ी बात समझा दी।



5.6 स्वार्थ की दुनिया

अब ना करै काउँ सों यारी ! गरज कि दुनियाँ सारी !

गरज परे के भाइ बंद हैं, गरज के सब हितकारी ॥

गरज परे के परमेसुर नीं, गरज के बाप मतारी ॥

गरदन दए नो गरज 'ईसुरी' गरज परे की प्यारी ॥

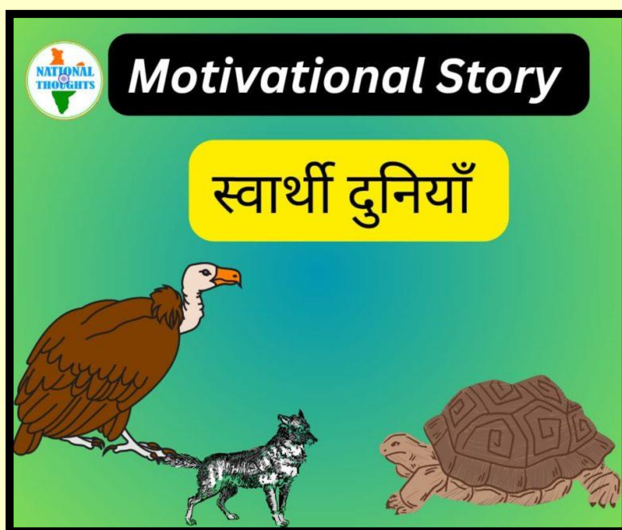
व्याख्या—

अब कोई किसी से प्रेम न करे। दुनिया मतलब की है। भाई-बंधु स्वार्थी हैं। सभी हितैषी मतलबी हैं। स्वार्थ के कारण लोग ईश्वर और माँ-बाप को मानते हैं। सिर लेने तक स्वार्थ घेरे है। अरे ईसुरी, प्यारी भी पूरी मतलबी निकली।

प्रासंगिकता

आज की दुनिया में कोई दूसरे का भला वहीं तक करता है, जहां तक उसका स्वार्थ सधता है. अगर कोई बिना स्वार्थ दूसरों का भला करता है तो वह संत बन जाता है क्योंकि तब परमार्थ ही उसका स्वार्थ होता है। इस तथ्य को हम प्रेरक प्रसंग से जानेंगे—एक बार एक आदमी अपने छोटे से बालक के साथ एक घने जंगल से जा रहा था! तभी रास्ते मे उस बालक को प्यास लगी और उसे पानी पिलाने उसका पिता उसे एक नदी पर ले गया , नदी पर पानी पीते पीते अचानक वो बालक पानी मे गिर गया और डूबने से उसके प्राण निकल गए!

वो आदमी बड़ा दुखी हुआ और उसने सोचा की इस घने जंगल मे इस बालक की अंतिम क्रिया किस प्रकार करूँ ! तभी उसका रोना सुनकर एक गिद्ध , सियार और नदी से एक कछुआ कहां आ गए , और उस आदमी से सहानुभूति व्यक्त करने लगे , आदमी की परेशानी जान कर सब अपनी अपनी सलाह देने लगे।



सियार ने लार टपकाते हुए कहा , ऐसा करो इस बालक के शरीर को इस जंगल मे ही किसी चट्टान के ऊपर छोड़ जाओ, धरती माता इसका उद्धार कर देगी! तभी गिद्ध अपनी ख़ुशी छुपाते हुए बोला, नहीं धरती पर तो इसको जानवर खा जाएँगे, ऐसा करो इसे किसी वृक्ष के ऊपर डाल दो ,ताकि सूरज की गर्मी से इसकी अंतिम गति अच्छी हो जाएगी। उन दोनों की बाते सुनकर कछुआ भी अपनी

भूख को छुपाते हुआ बोला ,नहीं आप इन दोनों की बातो मे मत आओ, इस बालक की जान पानी मे गई है, इसलिए आप इसे नदी मे ही बहा दो !और इसके बाद तीनो अपने अपने कहे अनुसार उस आदमी पर जोर डालने लगे।

तब उस आदमी ने अपने विवेक का सहारा लिया और उन तीनो से कहा , तुम तीनो की सहानुभूति भरी सलाह मे मुझे तुम्हारे स्वार्थ की गंध आ रही है, सियार चाहता है की मैं इस बालक के शरीर को ऐसे ही जमीन पर छोड़ दूँ ताकि ये उसे आराम से खा सके, और गिद्ध तुम किसी पेड़ पर इस बालक के शरीर को इसलिए रखने की सलाह दे रहे हो ताकि इस सियार और कछुआ से बच कर आराम से तुम दावत उड़ा सको और कछुआ तुम नदी के अन्दर रहते हो इसलिए नदी मे अपनी दावत का इंतजाम कर रहे हो ! तुम्हे सलाह देने के लिए धन्यवाद लेकिन मै इस बालक के शरीर को अग्नि को समर्पित करूँगा , ना की तुम्हारा भोजन बनने दूंगा! यह सुन कर वो तीनो अपना सा मुह लेकर वहां से चले गए।

शिक्षा – दोस्तों मै यह नहीं कह रहा हूँ की हर व्यक्ति आपको स्वार्थ भरी सलाह ही देगा , लेकिन आज के इस competitive युग मे हम अगर अपने विवेक की छलनी से किसी सलाह को छान ले तो शायद ज्यादा सही रहेगा !

5.7 कर्म का महत्व

मानूस बड़ौ होत करनी सें! रजउ से कऔं मैं तीसें !
नेकी बदी पुन्न परमारथ, भगत भजन होय जी सें ॥
अपने जान गुमान न करिए, लरिए नाईं किसी सें ॥
बे ऊँचे हो जात चलें जे नैकें मिले सबी सें ॥
फूँक फूँक पग धरत 'ईसुरी' स्याने लोग इसी सें ॥

व्याख्या—

मनुष्य बड़ा कर्मों से होता है। इसीलिए मैं रजउ से कहता हूँ । भलाई, बुराई, पुण्य, परमार्थ, भक्ति, भजन – सब उसी से होता है। अपने जाने कभी घमंड न करे और न किसी से लड़ाई। वे लोग जो सब से नम्र होकर मिलते हैं, महान बनते हैं। अरे ईसुरी ! इसीलिए बुद्धिमान लोग फूंक-फूँककर पैर रखते हैं।

प्रासंगिकता

इस दुनिया में कर्म को मानने वाले लोग कहते हैं भाग्य कुछ नहीं होता। और भाग्यवादी लोग कहते हैं किस्मत में जो कुछ लिखा होगा वही होके रहेगा। यानी इंसान कर्म और भाग्य इन दो बिंदुओं की धूरी पर घूमता रहता है। और एक दिन इस

जग को अलविदा कहकर चला जाता है। भाग्य और कर्म को बेहतर से समझने के लिए पुराणों में एक कहानी का उल्लेख मिलता है।

प्रेरक प्रसंग— एक बार देवर्षि नारद जी वैकुंठधाम गए, वहां उन्होंने भगवान विष्णु का नमन किया। नारद जी ने श्रीहरि से कहा, 'प्रभु! पृथ्वी पर अब आपका प्रभाव कम हो रहा है। धर्म पर चलने वालों को कोई अच्छा फल नहीं मिल रहा, जो पाप कर रहे हैं उनका भला हो रहा है।'तब श्रीहरि ने कहा, 'ऐसा नहीं है देवर्षि, जो भी हो रहा है सब नियति के जरिए हो रहा है।'



नारद बोले, मैं तो देखकर आ रहा हूं, पापियों को अच्छा फल मिल रहा है और भला करने वाले, धर्म के रास्ते पर चलने वाले लोगों को बुरा फल मिल रहा है। भगवान ने कहा, कोई ऐसी घटना बताओ। नारद ने कहा अभी मैं एक जंगल से आ रहा हूं, वहां एक गाय दलदल में फंसी हुई थी। कोई उसे बचाने वाला नहीं था। तभी एक चोर उधर से गुजरा, गाय को फंसा हुआ देखकर भी नहीं रुका, वह उस पर पैर रखकर दलदल लांघकर निकल गया। आगे जाकर चोर को सोने की मोहरों से भरी एक थैली मिली। थोड़ी देर बाद वहां से एक वृद्ध साधु गुजरा। उसने उस गाय को बचाने की पूरी कोशिश की। पूरे शरीर का जोर लगाकर उस गाय को बचा लिया लेकिन मैंने देखा कि गाय को दलदल से निकालने के बाद वह साधु आगे गया तो एक गड्ढे में गिर गया। प्रभु! बताइए यह कौन सा न्याय है?

नारद जी की बात सुन लेने के बाद प्रभु बोले, 'यह सही ही हुआ। जो चोर गाय पर पैर रखकर भाग गया था, उसकी किस्मत में तो एक खजाना था लेकिन उसके इस पाप के कारण उसे केवल कुछ मोहरें ही मिलीं।

सीख*— इंसान को कर्म करते रहना चाहिए, क्योंकि कर्म से भाग्य बदला जा सकता है*

/5.8 मनुष्य का व्यवहार कैसा हो?

मानुस बड़े भाग से होवै ! रजउ छोड़ दो लोबै!
मिलके चाल चलौ दुनिया में, सब से राख घरोबै ॥
जिंदगानी को कौन भरीसौ, जुबन जात रँए रोबै ॥
भरेतला में सपरत 'ईसुर' नंगी कहा नि चौबै ॥

व्याख्या—

मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है। अरी रजउ, लोभ करना त्यागो। दुनियाँ में हिलमिल कर चाल चलो। सबसे पारिवारिकता बनाओ।

जीवन का क्या ठिकाना ? यौवन बीतने पर रोना पड़ता है। 'ईसुरी' तो भरे तालाब में नहाता है। वह तो नंगा है और उसके पास निचोड़ने को कुछ नहीं।

प्रासंगिकता



कहना है की जन्तुनाम नर जन्म दुर्लभम उसका अर्थ है की मनुष्य का जन्म मिलना बडी ही सौभाग्य की बात है क्यूंकि 84 लाख योनी में घूमने के बाद मनुष्य का जन्म मिलता है इस लिए उसे बहुत ही दुर्लभ माना गया है। किन्तु आज का मनुष्य ऐसा कोइ भी विचार अपने मनमे लाये बीना बस क्षणिक आनंद लेने में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। वो बहुत सारे ऐसे बुरे कर्म भी करता है जो उसे नही करने चाहिए। ऐसे ही उनकी जिंदगी पसार होती रहती है और उसे पता भी नही चलता है की कब उनकी उम्र 70 साल हो गई?

संस्कृत में एक बहुत अच्छा श्लोक है

धनान भूमौ पशवष्य गोष्ठे भार्या गृहद्वारी जन: श्मशाने।

देहच चितायं परलोक मार्गे कर्मानु गच्छती जीव एक: ।।



उसका अर्थ है की मृत्यु के बाद हमनें जीतना धन कमाया है , हमारे पास जीतने भी पशु या फिर मिलकत है वो सब यही रह जायेगे। पत्नी घर के द्वार तक पति को अंतिम विदाई देगी। हमारे मित्र और स्नेहीजन श्मशान तक हमारा साथ देंगे ।हमारा देह जिसके लिए हम 24 घंटे दौडधाम करते है वो चिता जलाने तक हमारा साथ देगा। उससे आगे जीव के साथ क्या जाता है ? हमारे ऋषि कहते है की इससे आगे हमने सारी जिंदगी जो कर्म किये

होंगे वो ही हमारे साथ जाएंगे। एक ऐसी भी मान्यता है के स्वर्ग के दरवाजे ऑटोमेटिक रहते है और जब जीव वहां पहुचता है तो उसके कर्म के वजन से वो खुलते है। अगर सतकर्म का वजन बहुत होगा तो जीव के वहा पहुचने पर वे तुरंत ही खुल जाएंगे। इस लिए हमारी असली दौलत हमारे सत्कर्म ही है, विश्व विजेता सिकंदर को भी अपने अंतिम समय मे यह बात समज में आ गईं थी इस लिए सिकंदर ने कहा था की जब मेरी मृत्यु हो तो मेरे दोनो हाथ खुले ही रखना दुनिया को पता चलने दो की विश्व को जीतने वाला सिकंदर खाली हाथ आया था और खाली हाथ ही वापस जा रहा है।

भले ही मनुष्य जीवन क्षनिक हो फिर भी हमे अपने सतकर्म से उसे सार्थक बनाना चाहिए। फूलों का आयुष्य कितना कम होता है पर वो अपने सुगंध देने के धर्म का अंत तक पालन करते है। अंधकार का साम्राज्य कितना बड़ा होता है की सहस्र सूर्य भी उसे दूर ना कर सके पर एक कोने में बिठा हुआ छोटा सा दिपक अपने अंत समय तक अंधेरे से झुझता रहता है। मनुष्य को भी फूलो और दिपक जैसा बनना चाहिए और अपने आयुष्य के अंत समय तक हमेशा अच्छे कर्म करते रहना चाहिये।

हम कई बार सोचते है की अब कोई बुरा काम करना ही नही है किन्तु हम अपने निर्णय में टिक नही पाते है। ऐसा ही एक व्यक्ति था उसने सुना था की एक संत है जो कभी भी कोई दुष्कर्म करते नही है और हमेशा सतकर्म में ही प्रवृत रहते है। यह व्यक्ति सोचने लगा चलिए इस संत को मिलकर उसकी सफलता का राज जानते है की जिससे में भी कोई बुरे कर्म ना करने की शिख ले सकू। वह आया और उसने संत से पूछा आप के हाथ से क्यों कभी बुरे कर्म नही होते है। संतने जवाब नही दिया और कहा “अरे बेटे में तुम्हारा मस्तिष्क पढ सकता हु और मैं यह क्या देख रहा हु ?बेटे तुम केवल 7 दिन ही जिंदा रहने वाले हो”। संत के मुंह से यह बात सुनकर उसे बहुत बडा झटका लगा और वो वहां से चला गया। उसे बहुत डर लगने लगा क्योंकी इतने बड़े संतने उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। अब तो वो धार्मिक ग्रंथ पढ़ने लगा, दान देने लगा, सतकर्म करने लगा और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा। देखते ही देखते 7 दिन पूरे हो गए और उसे कूछ भी नही हुआ वो संत के पास वापस आया और कहने लगा “आपने तो कहा था में मर जाऊंगा पर मुजे तो कुछ नही हुआ “? संत ने कहा पहले यह बताओ तूमने ईतने दिनों तक किया क्या ? व्यक्तिने जवाब फ़िया भक्ति, दान ,सत्कर्म इत्यादी अगर 7 दिनोंका निचोड़ कहु तो मैने कोई भी बुरा काम नही किया किन्तु सब अच्छे ही कर्म किये। फिर संत ने कहा बेटा तुम्हे तुम्हारे उस प्रश्न का जवाब शायद मिल।गया होगा कि मेरे हाथ से बुरा काम क्यों नही होता। बेटे में रोज सुबह उठते ही यही सोचता हूं की यह मेरी जिंदगी का अंतिम दिन है इस लिए मेरे हाथ से कोई भी बुरा कर्म कभी नही होता है।

सीख— मित्रो अगर हम भी अपना मनुष्य देह सफल करना चाहते है तो हमेशा अच्छे ही कर्म करे और भगवद गीता में भगवान को मनुष्य का जैसा जीवन अपेक्षित है वैसा जीवन बनाये।

5.9 बचपन सबसे अच्छा

सब सें भली बैस लरकइयाँ! दैय ना रऔं गुसइयाँ !

हँस लिपटात सबइ सें बौलत, चढ़ जैयत ते कइयाँ ॥

लरकन संग रहुनियाँ माँगत, ढील अइयत ते गइयाँ ॥

ज्वानी में बाहर खों कड़तन, घर घर होत लरइयाँ ॥

ईसुर संग रए बारे में, बलदाऊ की छइयाँ ॥

व्याख्या—

लड़कपन की उम्र सबसे अच्छी है। भगवान ने सदा वही उम्र क्यों नहीं दी? तब तो सबसे हँसते, बोलते और लिपट जाते थे। गोद में भी चढ़ जाते थे। लड़कों के साथ खेलते थे। गाएँ खोल आते थे। अब जवानी में घर से बाहर निकलना झंझट का काम है। इससे घर-घर लड़ाई-झगड़े होने लगे। अरे ईसुरी ! लड़कपन में हम बदलाव की छत्र-छाया में रहते थे।

प्रासंगिकता

बचपन में दोस्तों में लड़ाई हो तो पल में सुलझ जाती है और ऐसा कई बार मेते साथ हुआ भी है दांत भी नहीं खाते जिंदगी का अलग मजा होता है ना कोई प्रेशुर होता पैरेंट्स का पढ़ाई का जॉब जो चल रहा वेसा ही चलने दो... ..

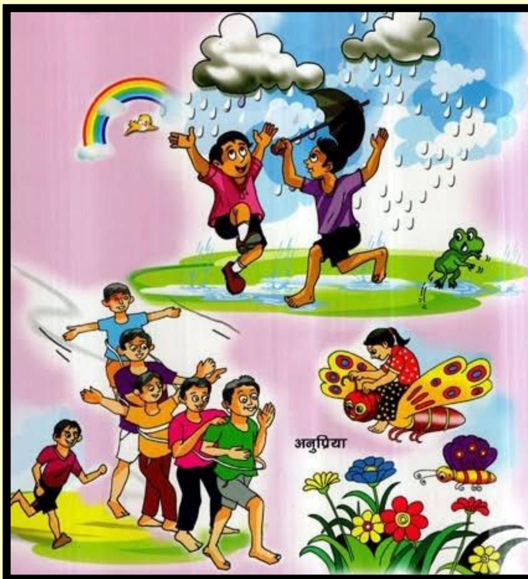
प्रेरक प्रसंग— मेरे बचपन की कहानी

मेरे बचपन के वक़्त तो मुर्गों की बांग नींद से जगाती थी। कभी बाबा के तानें , तो कभी मम्मी का प्यार , बिस्तर छुड़वाती थी । सूरज के जगने से पहले ही ,दिन शुरू हो जाता था।हर कोई अपने काम को लेकर ,काम में लग जाता था । नहा धोकर स्कूल जाने को सब तैयार होते थे,जिनको मन न होता जाने का ,पेट पकड़कर रोते थे। कई मील चलने के बाद हम अपने स्कुल पहुंच जाते थे, अपनी अपनी क्लास में जाकर बैग रखकर आते थे,मॉर्निंग असेंबली के नाम पर बस राष्ट्रगान ही गाते थे, फिर सारे अपनी अपनी क्लासेज में वापस जाते थे रॉल कॉल के बाद तुरंत शुरू पढ़ाई होती थी,शायद ही कोई पीरियड था,जिसमें न होती पिटाई थी ।चार पीरियड बाद हमारा लेज़र हो जाता था, बड़े चाव से हर कोई अपना टिफ़िन बैठ के खाता था ।फिर भी घर के टिफ़िन में चने वाले की कहां बात थी। चूरण ,अचार ,चना, पानीपुरी हम लोगों की आदत थी ।स्कूल के बाद शाम को फिर सब खेलने को आते थे, जब तक न चिल्लाये बाबा घर को हम नहीं जाते थे । न फेसबुक न व्हॉट्सएप न



स्मार्टफोन तब होते थे, मेरे बचपन के वक़्त तो घर में तोता मैना होते थे। गर्मियों में हर कोई पतंग उड़ाकर , झूले झूलते रहते थे, छुट्टी के दिन कंचे खेलने , बूढ़े बच्चे बन पड़ते थे । शनिवार का आधा स्कूल ,एक उत्सव था। त्यौहार था,'रंगोली','चित्रहार', 'रामायण', 'महाभारत' इन सबसे ही रविवार था। बिजली जाती रात को तब सब भूतिया कहानी सुनते थे 'मालगुड़ी डेज' के मीठे सपने हम आंखों में बुनते थे। 'सुरभि' देखके हर कोई अपने जी.के. का लिमिट बढ़ाता था 'विक्रम बेताल' के हर एपिसोड में ,बेताल आखिर उड़ जाता था । 'अलिफ़ लैला' की दुनिया में अलग अलग सी कहानी थी 'चंद्रकांता' देखने को मेरी जनरेशन ही दीवानी थी। अलग अलग सिक्के और माचिस के कवर हम खोजते थे 'व्योमकेश बक्शी' और 'तहक़ीक़ात' में असली विलन कौन सोचते थे। वो गर्मी के मौसम में 'गोल्ड स्पॉट' , 'सिट्रा' सबने गटकी थी। 'किस्मी', 'मेलडी' की टॉफियां उस वक़्त ज्यादा चॉकलेटी थी। 'लीला', 'बघीरा', 'का', 'भालू' सबसे 'मोगली' की यारी थी 'शक्तिमान' की "छोटी छोटी मगर मोटी बातें " कितनी प्यारी थी। 'चंदामामा' ,'फैंटम', 'टिंकल', 'चाचा चौधरी' सब पढ़ते थे 'ज़ी हॉरर शो' और 'आहट' के बाद टॉयलेट जाने को डरते थे। फ़ोन आने पर उसे उठाने को घर में रेस शुरू हो जाते थे। नंबर सभी बिना सेव किए हमको याद रह जाते थे। पहले कहां मां बाबा 'क्लासमेट' की कॉपिया दिलवाते थे बड़ी मेहनत से भूरे कवर कॉपी-किताबों में हम लगाते थे।





नए साल पे दीवारों पर ग्रीटिंग कार्ड्स की मालायें सजती थी। उन दिनों हर किसी के घर में 'फाल्गुनी पाठक' बजती थी। तब कहां लड़कियां सुन्दर दिखने को ब्यूटी पार्लर जाती थी।चेहरे पे पाउडर और माथे पे 'शिल्पा गोल्ड' लगाती थी। कुछ खास हमारा बचपन था और खास हैं यादें उनकी, बस यादें ही रह गयी अब , उस बीते हुए जीवन की। वो दिन न फिर आएंगे , न आएंगी वह रातें, जब फ़ोन बिना हम सामने से, कर लेते घंटों बातें ।वो ज़िन्दगी हर लम्हें में मीठी महक उड़ाती थी।मेरे बचपन के वक़्त तो मुर्गों की बांग नींद से जगाती थी ।

5.10 मन की परख

अपने मन मानिक के लानें! सुघर चौहरी चानें!

नर तन रतन जतन से राखौ, चड़ी प्रेमरस सानें ॥

बेंची ओई दुकाने जैहे, जो गुन खौं पैचानें ॥

'ईसुर' सब जाँगा फिर हारे, कोए धरत ना गानें ॥

व्याख्या—

अपने मन के रत्न की परख के लिए चतुर होना चाहिए। मैंने इस मानव देह के रत्न को बड़े यत्न से सँभाल कर रखा। इसे प्रेमरस की सान पर चढ़ाया है-तराशा है। यह उसी दूकान पर बेचा जाएगा जो गुन को पहचानता हो । ईसुरी सब जगह घूमा-फिरा, इसे कोई गिरवी नहीं रखता।

प्रासंगिकता

सच्चे मन से ईश्वर की आराधना करने वाले महसूस करते हैं कि उनका भगवान हमेशा उनके साथ रहता है। कभी-कभी भगवान खुद अपने भक्त की परीक्षा लेता है और जानने की कोशिश करता है कि भक्त कितना उनके करीब है और किस तरह से परम पिता परमेश्वर द्वारा बताए गए रास्ते पर चल रहा है।

यहां एक प्रेरक प्रसंग के जरिए में हम आपको एक ऐसी ही कहानी बता रहे हैं। एक समय मोची का काम करने वाले व्यक्ति को रात में भगवान ने सपना दिया और कहा कि कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा। मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी काफी सीमित थी। खाना खाने के बर्तन भी थोड़े से थे। इसके बावजूद वो अपनी जिंदगी से खुश रहता था। एक सच्चा, ईमानदार और परोपकार करने वाला इंसान



था । इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया। मोची मे सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी। भगवान

को चाय पिलाने के लिए दूध, चायपत्ती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया। दुकान को साफ कर वह भगवान का इंतजार करने लगा। उस दिन सुबह से भारी बारिश हो रही थी। थोड़ी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली बारिश के पानी में भीगकर ठिठुर रही है। मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आई और भगवान के लिए ए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई। दिन गुजरने लगा। दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आई और कहा कि मेरा बच्चा भूखा है इसलिए पीने के लिए दूध चाहिए। मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दे दिया। इस तरह से शाम के चार बज गए। मोची दिनभर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा।

तभी एक बूढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और कहा कि मै भूखा हूं और अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी। मोची ने उसकी बेबसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी। इस तरह से दिन बीत गया और रात हो गई। रात होते ही मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला कि "वाह रे भगवान सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया। क्या मैं गरीब ही तुझे बेवकूफ बनाने के लिए मिला था ।"तभी आकाशवाणी हुई और भगवान ने कहा कि "मैं आज तेरे पास एक बार नहीं, तीन बार आया और तीनों बार तेरी सेवाओं बहुत खुश हुआ और तू मेरी परीक्षा में भी पास हुआ है, क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परे हैं।"

इस कहानी से हमको यह शिक्षा मिलती है कि किसी भी मजबूर या ऐसा व्यक्ति जिसको आपकी मदद की जरूरत है उसकी मदद जरूर करना चाहिए। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि 'नर सेवा ही नारायण सेवा है। और मदद की उम्मीद रखने वाले, जरूरतमंद और लाचार लोग धरती पर भगवान की तरह होते हैं। जिनकी सेवा से सुकून के साथ एक अलग संतुष्टी का एहसास होता है।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष—

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बुंदेलखंड के लोकप्रिय और समर्थ कवि ईसुरी प्रसाद जो फाग के लिए प्रसिद्ध हैं, इनकी रचना 'ईसुरी के फाग' में से शिक्षा परक पद्यों को पढ़कर जो निष्कर्ष निकाले वह निम्नलिखित वर्णित हैं —

- जिसके रखवाले राम हैं उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ऐसे विभिन्न उदाहरण हैं जैसे कि ध्रुव, प्रह्लाद, राजा परीक्षित, मीरा, विभीषण आदि।
- मनुष्य का जीवन बड़े भाग से मिलता है। मनुष्य शरीर के लिए तो देवता भी तरसते हैं।
- मनुष्य शरीर का कोई भरोसा नहीं है। जीवन की आवश्यकताओं की प्राथमिकता को समझें। जीवन में जो कार्य सबसे अधिक आवश्यक हो, पहले उसी कार्य को करें।
- मीठी वाणी सुखदाई होती है जबकि कड़वी वाणी दुखदाई। मीठी वाणी से जगत प्रसन्न किया जा सकता है।
- भगवान को भक्त का आर्त (दुःख) देखा नहीं जाता। भगवान हमेशा भक्तो में वास करते हैं। भक्ति तभी सफल होती है, जब भक्त के मन में बुरे विचार न हों, भक्त अच्छे कर्म करता हो। जिस भक्त के विचार पवित्र हैं और जो बुरे कामों से दूर रहता है, सिर्फ उसे ही भगवान की कृपा मिलती है।
- राम नाम एक अद्भुत आनंद है जिसका स्वाद सांसारिक भोगों से अलग है जो हमें सांसारिक जीवन से छुटकारा दिलाता है।
- संसार का सबसे बड़ा सुख है भगवत भक्ति जो हमें जीवन के असली लक्ष्य में लगाती है। भक्ति तभी सफल होती है, जब भक्त के मन में बुरे विचार न हों, भक्त बुरे काम न करता हो। जिस भक्त के विचार पवित्र हैं और जो बुरे कामों से दूर रहता है, सिर्फ उसे ही भगवान की कृपा मिलती है।
- ये संसार स्वार्थ के मीत है। सारे रिश्ते नाते स्वार्थ से ही जुड़े हुए हैं। स्वार्थ के कारण ही लोग मां-बाप तथा ईश्वर को मानते हैं।
- मनुष्य की बढ़ाई अच्छे कर्मों में हैं न कि बुरे कर्मों में, लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी बातों से जो व्यक्ति मुक्त होता है भगवान राम उसी के ~~हृदय में वास करते~~हृदय में वासकरते हैं।

- इंसान को कर्म करते रहना चाहिए, क्योंकि कर्म से भाग्य बदला जा सकता है। मनुष्य के कर्म से ही भाग्य बदलता हैंहै न कि हाथ की लकीरों से। अच्छे कर्मों का परिणाम अच्छा होता है।
- मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है अच्छे संबंध अच्छे व्यवहारों से बनते हैं।
- बचपन का जीवन सबसे सुखमय जीवन होता हैं। ये जीवनकाल सांसारिक जीवन से परे होता है।
- मनुष्य जीवन की परख मन से होती है। मन में ईश्वर का वास होता है।
- मनुष्य जीवन में खुशियाँ आती नहीं हैं, खुशियों की खोज की जाती है।
- सेवा धर्म, परहित में एक जीवन की अलग संतुष्टि है और संतोष ही परम सुख है, जब सुख है तो जीवन आनंदमय है। किसी भी मजबूर या ऐसा व्यक्ति जिसको आपकी मदद की जरूरत है, उसकी मदद जरूर करना चाहिए। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि "नर सेवा ही नारायण सेवा है" और मदद की उम्मीद रखने वाले, जरूरतमंद एवं लाचार लोग धरती पर भगवान की तरह होते हैं।
- जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं उन्हें स्वर्ग और समृद्धि की प्राप्ति होती है। धर्म व्यक्ति को न्याय, सत्य, ईमानदारी और निष्ठा का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार यह फाग पद्य हमें सत्य और धर्म के महत्व को समझाता है और हमें यह सिखाता है कि सत्य का पालन करने वाला व्यक्ति अपार आनंद और समृद्धि का आनंद उठाता है।
- योगी लोग अपनी साधना में उन्माद, मोह, ममता और मद को छोड़कर लगे रहते हैं। वे ब्रह्म को सर्वव्यापक, अव्यक्त, अविनाशी, चिदानंद स्वरूप और निर्गुण गुणों का स्रोत मानते हैं। उनकी महिमा को वेद भी वर्णन नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वे तीनों कालों में एकरस (निर्विकार) बने रहते हैं।
- कर्मफल ईश्वर द्वारा निर्धारित होता है। जीवन काल और कर्म के अधीन होते हैं। उपदेश देने वाले और करने वाले अलग होते हैं।

6.2 सुझाव

- मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है अतः जीवन को बेहतरीन बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है अतः हमें अच्छे कर्मों को करता रहना चाहिए।
- मधुर वाणी आत्मा को तृप्त करती है, जबकि कटु वाणी स्वयं सहित सभी को संतप्त करती है। अत: हमेशा मीठा बोलना चाहिए।
- जिस दिन अपने लोग अपना साथ छोड़ देते हैं उस दिन कोई भी हित करने वाला नहीं रह जाता अतः हमें विषम परिस्थितियों में कभी भी अपने लोगों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

- धीरज, धर्म, विवेक, साहस और सत्य आपत्ति काल में यही हमारा सहारा होते हैं अतः इन गुणों को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए।
- हमें हमेशा समय का सदुपयोग करना चाहिए और अवसर का लाभ उठाना चाहिए। आलस्य के कारण शुभ अवसर हाथ से निकल जाते हैं इसलिए आज का काम कल पर कभी न टालना चाहिए।
- क्रोध की अपेक्षा हम प्रेम से ही किसी को प्रसन्न कर सकते हैं। बुरे वचनों के प्रहार से अथवा गाली-गलौज से जीत जाने पर भी उसे हार ही समझना चाहिए।
- विपरीत बुद्धि कहीं न कहीं विनाश का कारण होती है अतः हमें सद्बुद्धि, छल प्रपंच रहित सात्विक बुद्धि से कार्य करना चाहिए।
- हमें अपनी बुद्धि का प्रयोग दूसरे के अहित चिंतन में न करके स्वयं की उन्नति एवं लोक कल्याण करना चाहिए।
- हमें अपने जीवन में प्रेम, प्रतिष्ठा प्राप्ति, और परमार्थ के पद का अनुसरण करना चाहिए।
- हमें दूसरों की कमियाँ देखने से पहले आचरण की कमियों को देखना चाहिए। ये स्वयं को आसानी से दिखाई नहीं देती। इसके लिए बड़े यत्न एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है। कोई भी विरला व्यक्ति ही अपनी कमियों को देख पाता है ।
- यदि हमें अवसर मिले तो संत समागम जरूर करना चाहिए। सत्पुरुषों, संतों और उच्च गुणवान लोगों के संग में रहने का प्रयास करें। उनसे सीखें और उनके मार्ग का अनुसरण करें।
- दुष्ट की न कलह अच्छी, न प्रेम, अतः हमें दुष्टों की संगति नहीं करना चाहिए। दुष्टों की चिकनी चुपड़ी बातों में नहीं आना चाहिए, क्योंकि वह अपना स्वार्थ ही सिद्ध करते हैं।
- आपको दुष्टों के संग से दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए। यदि आपको लगता है कि कोई दुष्ट गुण आप में मौजूद है, तो उसे सुधारें और उच्चतम मान्यताओं के प्रति अपने समर्पण को मजबूत करें।
- संत और असंत के गुणों को समझें, विचार करें कि संतों के गुण, जैसे परोपकार, धार्मिकता, और समर्पण, हमें अपने आप में एक उत्कृष्ट प्रकृति के ओर ले जाते हैं। असंतों के गुणों, जैसे स्वार्थपरायणता, दुष्टता, और अहंकार, के प्रभाव को समझें और उनसे दूर रहने का प्रयास करें।
- अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्य लोगों की मदद करने की कोशिश करें। यह मानवीय संबंधों को मधुर और सुखद बनाता है और आपके आस-पास की समाजिक परिस्थितियों को सुधारने में मदद करता है।
- साधुओं की तरह, अपने मन को शांत और स्थिर रखने के लिए ध्यान और मेधा विकसित करें। नियमित ध्यान और धार्मिक अभ्यास के माध्यम से अपनी आत्मा को ऊँचाईयों तक ले जाने का प्रयास करें।

- जीवन में उचित विचार और कर्मों का चयन करें ताकि सत्संग की प्राप्ति हो सके। अच्छे संग को आदर्श बनाएं और कुसंग से दूर रहें।
- गुरु के द्वारा दिए गए उपदेशों को अपनाएं और उन्हें अपने जीवन में सम्मिलित करें। गुरु के मार्गदर्शन के आधार पर आप अपने ध्यान, मेधा, और अन्तःकरण को शुद्ध करने की प्रयास कर सकते हैं और सत्य, न्याय, प्रेम, और अहिंसा के मार्ग पर चल सकते हैं।
- गुरु के साथ संबंध विकसित करें और उनके साथ संपर्क में बने रहें। उनसे संदेश, सलाह, और ज्ञान प्राप्त करने के लिए नियमित रूप से संपर्क में रहें। इसके लिए आप संबंधित संगठनों, संघों या आचार्यों के साथ जुड़ सकते हैं जो गुरु के मार्गदर्शन को प्रदान करते हैं।
- गुरु के मार्गदर्शन के अनुसार ध्यान और साधना को अपनाएं। योग, मेधाध्यान, प्रार्थना, और मनन जैसी अभ्यासों को अपने जीवन में शामिल करें ताकि आप अपने अंतरंग ज्ञान को विकसित कर सकें और आत्मसात का अनुभव कर सकें।
- अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से संवाद करें और उनकी बातें सुनें। उन्हें यह अनुभव करने दें कि आप उन्हें समझते हैं और उनकी बातों को महत्व देते हैं।
- अपने बच्चों को उनके प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें समर्थन करें। उनके साथ एकजुट रहें और उनकी जरूरतों को समझें।
- अपने बच्चों को संस्कृति, नैतिकता, और न्याय के मूल्यों को समझाएं। उन्हें सच्चाई, ईमानदारी, और सम्मान के महत्व को सिखाएं।
- अपने बच्चों को स्वस्थ्य जीवनशैली के महत्व को समझाएं। व्यायाम, स्वस्थ आहार, और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल को प्रोत्साहित करें।
- हमें समय की कीमत को समझना चाहिए और उसे सत्यापित करने के लिए अपने संसाधनों का सही उपयोग करना चाहिए। आपको अपने कार्यक्रम को समयबद्ध रूप से प्रबंधित करना चाहिए, अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर कार्रवाई करें और समय को अच्छी तरह से नियोजित करें।
- समय चला जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं होता है। इसलिए हमें वर्तमान की कीमत को समझना चाहिए और हमेशा जीवन के हर लम्हे का आनंद लेना चाहिए।
- आध्यात्मिक पुस्तकों (गीता, सांख्यदर्शन, वेदांतसार, रामायण आदि) का अध्ययन करें और योगी पुरुषों के चित्रों को जानने का प्रयास करें।

- सात्विक आहार लेना योगी पुरुष बनाने में महत्वपूर्ण है। सात्विक आहार शुद्ध, प्राकृतिक और मानसिक शांति को बढ़ाने के लिए मदद करता है। शुद्ध और प्राकृतिक आहार का सेवन करें और तामसिक और राजसिक आहार की मात्रा को कम करें।
- नियमित योगाभ्यास करना महत्वपूर्ण है। योग के विभिन्न आसनों और प्राणायाम के अभ्यास से शरीर, मन और आत्मा का संतुलन स्थापित होता है। इसके लिए नियमित और निष्ठापूर्वक अभ्यास करना आवश्यक है।
- गुरु का सहारा लेना योगी बनने में लाभदायक हो सकता है। यदि संभव हो सके, एक अनुभवी योग गुरु की खोज करें और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करें। गुरु के मार्गदर्शन में आपको सही दिशा और प्रेरणा मिलेगी और आपकी साधना को समर्थन किया जाएगा।
- ब्रह्मचर्य के माध्यम से अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करें और सत्त्वगुण को बढ़ावा दें। इससे मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है।
- हमें जीवन में अनुचित या उचित यह समझकर ही काम करना चाहिए और हमेशा समझबूझकर निर्णय लेना चाहिए। वेद और विद्वान् इस परिप्रेक्ष्य में सही दिशा देते हैं कि हमें जल्दबाजी में कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए, बल्कि उचित समय लेकर उचित विचार करना चाहिए। इसके लिए, आपको निम्नलिखित सुझाव दे सकता हूँ:
- किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले समय का को अच्छी तरह से सोच विचार करना चाहिए। किसी कार्य की सफलता के लिए एक योजना बनाना महत्वपूर्ण होता है।
- किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले, उचित तैयारी करें। आवश्यक ज्ञान और संसाधनों का संग्रह करें ताकि आप कार्य को सुरक्षित और समय पर पूरा कर सकें।
- किसी भी कार्य में, संयम और धैर्य रखना महत्वपूर्ण है। जब कार्य में कोई समस्या या विघ्न आए, तो आपको स्थिर रहकर समस्या का समाधान खोजना चाहिए।
- हम स्वार्थ के बजाय सच्ची प्रेम का आदान-प्रदान करते हैं, तो हम समाज में एक मधुर और सदैव स्थायी संबंध निर्माण कर सकते हैं। इसके लिए हमें दूसरों के भलाई को ध्यान में रखने, उनकी मदद करने और उन्हें प्रेम से संबोधित करने की कोशिश करनी चाहिए।
- हमें सेवा भावना और समर्पण की भावना को बढ़ाना चाहिए। हमें समाज के दुखी, गरीब और कमजोर लोगों की मदद करने, अपने समय, धन और संसाधनों को सामाजिक प्रगति और सार्वभौमिक कल्याण के लिए उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।
- हमें स्वार्थ की आदतों को छोड़कर निःस्वार्थता को महत्व देना चाहिए। निःस्वार्थता हमें अपने आप को अन्यों के लिए समर्पित करने, साझा करने और प्रेम करने की क्षमता प्रदान करती है।

- मनुष्य शरीर को मूल्य दें और इसे सम्मान दें क्योंकि यह साधन का धाम है और मोक्ष के द्वार है। इसे स्वस्थ और सकारात्मक ढंग से रखने के लिए ध्यान दें।
- शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ, मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्व दें। अपने दोषों और कमजोरियों के बारे में जागरूक रहें और स्वयं के सामर्थ्य पर विश्वास रखें।
- मनुष्य शरीर नरक, स्वर्ग और मोक्ष के लिए सीढ़ी है और इसमें कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति की प्राप्ति होती है। उन्हें भक्ति और ज्ञान के महत्व को समझाएं और इसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें।

'ईसुरी की फागों' में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान शिक्षा में अवश्य स्थान देना चाहिए। जिससे शिक्षा मूल्य परक हो और हमारा देश शान्ति एवं सुख के साथ आर्थिक प्रगति भी कर सके।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध उपादेयता अत्यंत आवश्यक है प्रस्तुत लघु शोध का शीर्षक ईसुरी के भाग में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता जिसके अंतर्गत बुंदेलखंडी कवि ईसुरी प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है।

शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य इससे प्रेरणा प्राप्त करके अपने जीवन को सफल कर सकेंगे। बुंदेलखंडी कवि ईसुरी प्रसाद ने ईसुरी की फागें नामक कृति की सर्जना की जिससे उनका नाम बुन्देली साहित्य के जगत में सदा के लिए अमर हो गया। हमें भी इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रूचि के अनुसार जीवन में ऐसे श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए जिससे जगत में भी सदा याद रखें। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में बुंदेलखंडी कवि ईसुरी प्रसाद के ईसुरी की फागें' नामक कृति की शैक्षिक मूल्य से युक्त कुल सोलह फागों का भावार्थ एवं प्रासंगिकता सहित विवेचना की गई है जिन्हें शिक्षा के विभिन्न स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी नैतिक मूल्यों का आत्मसात कर सकें।

यदि हमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों प्रगति करनी है तो ईसुरी की फागों में निहित शिक्षा परक मूल्यों की वर्तमान शिक्षा में अवश्य स्थान देना चाहिये। जिससे शिक्षा मूल्य परक हो और हमारा देश शान्ति एवं सुख के साथ आर्थिक प्रगति भी कर सकें विश्व गुरु का दर्जा पुनः प्राप्त कर सके और छात्रों में नैतिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक गुणों को विकसित किया जा सके। सच तो यह है कि भारत आज भी पाश्चात्य दासता से स्वतंत्र नहीं हुआ है और मूल्यों का ह्रास हो रहा है। शिक्षा जीवन का स्वरूप निश्चित करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक प्रन्थों का अनुसरण करना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए 'इसुरी की फागों' में निहित मूल्यों की महती आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों में सुसंस्कृत, लोकतांत्रिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक गुणों को विकसित किया जा सके।

6.4 अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्षों की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ पर निर्भर है। शैक्षिक निहितार्थ न होने पर शोध कार्य की कोई उपायोगिता सिद्ध नहीं होती है, जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है।

- जिस प्रकार ईसुरी प्रसाद ने निर्धन होने के बाद भी अपना समाज में अलग स्थान प्राप्त किया, उसी प्रकार चाहे जितनी भी कठिनाइयों हो, हमें उन कठिनाइयों का सामना कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।
- ईसुरी प्रसाद जी ने सांसारिक जीवन से अलग होकर वैराग्य धारण कर लिया और एक महान ईसुरी की फाग के नाम से जाने वाले बुंदेलखंड के कवि के रूप में अपना स्थान पाया, उसी प्रकार हमें अपने जीवन में डांट-फटकार को सकरात्मक लेते हुए जीवन की उन्नति शिखर में पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए।
- ईसुरी प्रसाद जी को बचपन से ही सहज काव्य प्रतिभा इन फागों के रूप में ही प्रस्फुटित हुई है। बचपन से ही वह ढोल बजाते एवं फागें गाया करते थे। विद्यार्थियों को भी काव्य प्रतिभाएँ सिखाई जाना चाहिए।
- जिस प्रकार ईसुरी प्रसाद जी की एक कृति ने उन्हें बुलन्दियों पर पहुँचा दिया उसी प्रकार विद्यार्थियों को इससे प्रेरणा प्राप्त कर किसी भी कार्य को कठोर परिश्रम, लगन एवं पूर्ण मनोयोग से उचाईयों की सीमा तक इस प्रकार करने का यत्न करना चाहिए, ताकि वह उनके जीवन के उद्धार का कारण बन सके।
- ईसुरी विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे। पर सरस्वती की उन पर विशेष कृपा थी वे जन्मसिद्ध कवि थे, देहातों में होली के अवसर पर एक प्रकार के गीत गाये जाते हैं वे फाग कहलाते हैं।
- शिष्ट समाज में होली के इन गीतों का कोई चलन नहीं है। वे एक विशेष प्रकार के प्राथमिक सुर और ताल के में रूप प्राकृत मानव के मन का उच्छ्वास मात्र हैं। पर ईसुरी को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने अपनी स्वाभाविक कवित्वशक्ति के बल से इन उपेक्षित और अनाहत गीतों को साहित्य और संगीत का एक अनुपम रूप प्रदान किया।
- ईसुरी प्रसाद की बाल्यावस्था अत्यन्त कष्टमय में रहा। साधना के कारण बाद का जीवन अत्यन्त सुखमय हुआ। इससे प्रेरणा मिलती है, कि प्रारंभिक जीवन कष्टपूर्ण होने पर भी हम साधना के द्वारा बाद का जीवन सुखमय बना सकते हैं।
- जिस प्रकार ईसुरी प्रसाद जी ने बुंदेली भाग कृति के रूप में जीवन के सत्य मार्ग बताया और अनुसरण किया। उसी प्रकार विद्यार्थियों को भी को अपने जीवन में सदमार्ग का अनुसरण करना चाहिए।
- जिस प्रकार ईसुरी प्रसाद की आस्था सांप्रदायिक धर्म में नहीं बल्कि मानव धर्म, संस्कृति, भगवत भक्ति थी। उसी प्रकार हमें भी मानव धर्म अपनाकर ऊँच-नीच, छोटे-बड़े तथा कुलीन-अकुलीन के भेदभाव से परे रहकर लोक कल्याण में संलग्न रहना चाहिए।

- जिस प्रकार ईसुरी प्रसाद जी सदाचार की प्रतिमूर्ति थे उसी प्रकार हमें भी शान्त, विनम्र एवं सरल स्वभाव को धारण करते हुए जीवन में सदाचार को अपनना चाहिए विद्यार्थियों में इन गुणों के विकास के लिए घर, परिवार तथा विद्यालय द्वारा विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिए ।
- बादल के जल की भांति हमें भी किसी भी परिस्थिति में सज्जनता का परित्याग नहीं करना चाहिए।
- हमें कपटी लोगों से सावधान रहना चाहिए, उनकी संगति से बचना चाहिए। लोक परलोक कहीं भी कभी भी कपटी लोग कल्याण नहीं होता।

भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किये गये लघु प्रबन्ध कवि ईसुरी की फागों में निहित शैक्षिक मूल्यों के भावार्थ एवं शैक्षिक प्रासंगिता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझावों के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत करता है। ये आगामी शोध हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं-

- भावी शोध में कवि ईसुरी के अन्य फागों को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखंडी कवि इसुरी प्रसाद के साथ अन्य कवियों के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के बुंदेली कवि ईसुरी की फाग रचना पर आधारित है। भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि ईसुरी की फाग रचनाओं का अन्य कवियों की फाग रचनाओं से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, सत्यनारायण (1998)। *हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन।* पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। दयानंद वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई। http://hdl.handle.net/10603/15385

खरे, उमाकांत (2005)। *बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि: पं० घासीराम व्यास का योगदान।* पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। डॉ०आर०पी०आर० महाविद्यालय, बरुआ सागर, झांसी। http://hdl.handle.net/10603/13018

कुमारी, ऋचा पटैरिया (2007)। *हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के लोकजीवन का अनुशीलन।* पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच (जालौन) http://hdl.handle.net/10603/15414

यादव, अर्चना (2009)। *रघुवीर सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा http://hdl.handle.net/10603/19856

मिश्रा ,अनु (2002) *मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सौन्दर्याभिव्यक्ति।* पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। दयानंद वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई (उ०प्र०) http://hdl.handle.net/10603/14939

ईसुरी–23 पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका (2023, जुलाई 21)। dhsgsu. https://www.dhsgsu.edu.in/images/Reading-Material/Hindi/ISHURI-SM-.pdf

लोककवि ईसुरी पर समग्र चर्चा करती महत्वपूर्ण पुस्तक (2023, जुलाई 21)| Sharadakshara. https://sharadakshara.blogspot.com/2021/07/blog-post_6.html?m=1

राम ने भी माना राम से बड़ा राम का नाम (2023, जून 12)| amarujala. https://shorturl.at/brR78

श्री राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। (2023, जून 14)| bhsktibharat. http://surl.li/iarpx

महिमा राम नाम की (2023, जून 14)| bhaktibharat. https://shorturl.at/BCLS

मानव जीवन का महत्व (2023, जून 15)। dadabhagwan. https://shorturl.at/mnLV5

श्री राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। (2023, जून 14)। bhsktibharat. http://surl.li/iarpx

व्यापारी ने जाना मीठी वाणी का महत्व (2023, जून 15)। bhaskar. https://shorturl.at/rzTV2

जो लोग भक्ति करते है। (2023, जून 15)। bhaskar. http://surl.li/iarpx

जय जगदीश हरे। (2023, जून 15)। bhaktibharat.

https://www.google.com/amp/s/www.bhaktibharat.com/amp/prerak-kahani/bhare-hue-main-ram-ko-sthan-kahan

मोटिवेशनल स्टोरी, स्वार्थी दुनिया। (2023,जून16) nationalthoughts.

https://nationalthoughts.com/motivational-story-swarthi-duniya/

कर्म बड़ा या भाग्य! (2023,जून16)। naidunia.

https://www.google.com/amp/s/www.naidunia.com/lite/spiritual/prerak-prasang-who-is-the-greatest-in-karma-and-luck-945417

मानव अपना जीवन श्रेष्ठ, सफल, सार्थक और प्रेरणादायक कैसे बनाये? (2023,जून 20)। vikaslakshya.

https://vikaslakshya.blogspot.com/2018/12/manav-jeevan-shreshth-safal-sarthak-aur.html?m=1

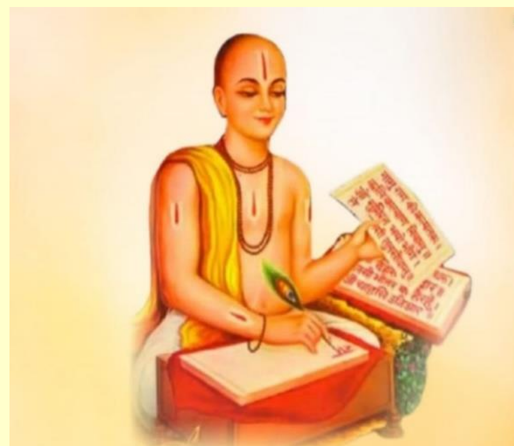
मेरे बचपन की कहानी। (2023,जून 20)। amarujala.

https://www.google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/kavya/mere-alfaz/johnny-ahmed-mere-bachpan-ki-kahani

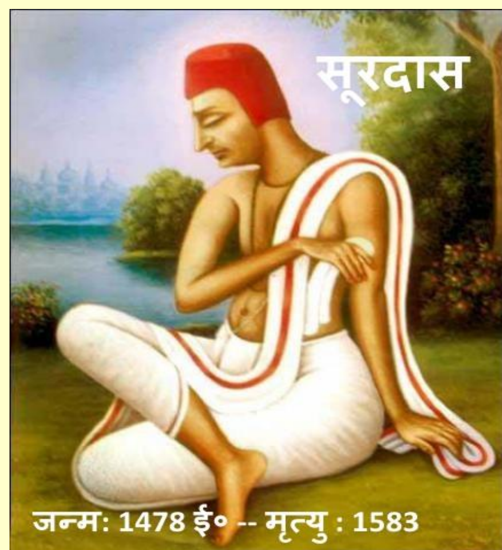
परिशिष्ट—अ

हिन्दी के प्रमुख कवि

- हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ आधुनिक काल के कवि और उनकी रचनाएँ हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं उनकी रचनाएँ—
- केदार नाथ अग्रवाल —युग की गंगा, नींद के बदल, लोक और आलोक,फूल नहीं रंग बोलते है
- तुलसीदास—रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, जानकी मंगल

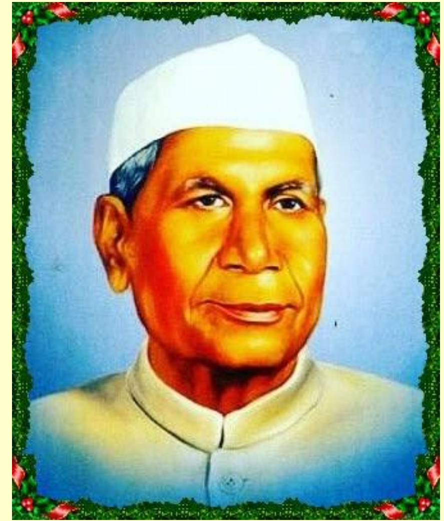


- दलपति विजय— खुमानरासो
- नरपति नाल्ह— वीसलदेव रासो
- जगनिक— परमालरासो
- सारंगधर— हम्मीर रासो, चंदबरदाई, पृथ्वीराज रासो
- कबीरदास— रमैनी, सबद, साखी
- सूरदास— सुरसारावली, सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर जायसी, कलाम, पद्मावत, अखरावट, आखिरी

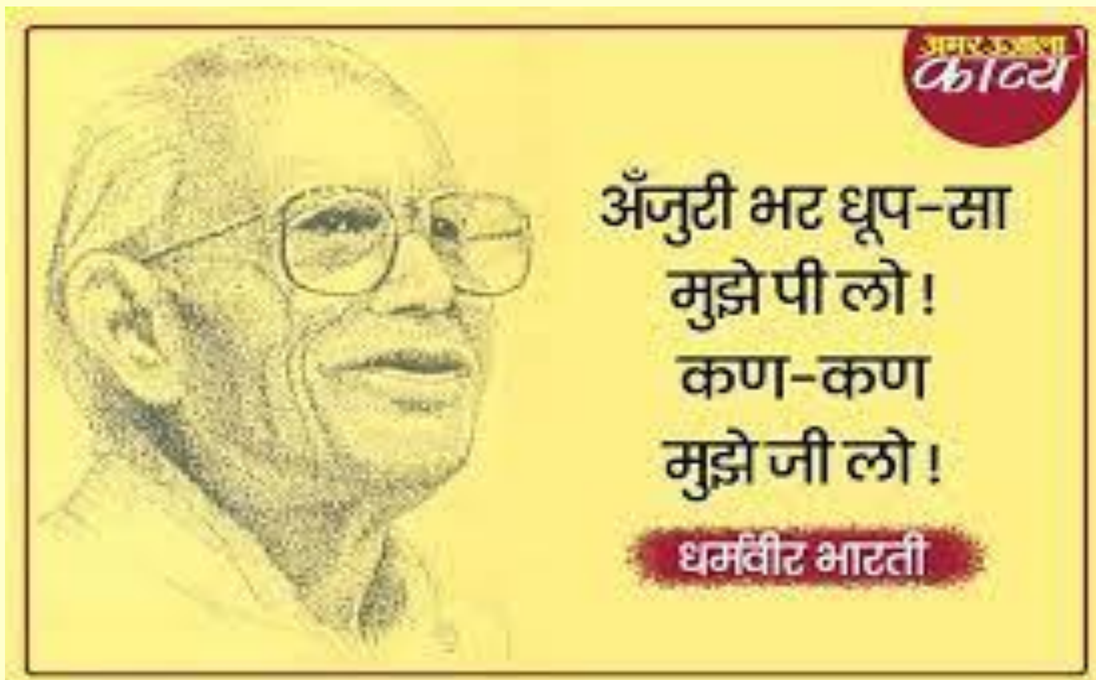


- बिहारी— बिहारी सतसई
- चिंतामणि— कविकुल, कल्पतरु, काव्य विवेक
- भूषण— शिवावावनी, शिवराजभूषण, छत्रशाल दशक

- केशवदास— रामचंद्रिका कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञानगीता
- रहीम— रहीम सतसई, रहीम रत्नावली, श्रृंगार सतसई, रास पंचाध्यायी, बरवे नायिका
- मीराबाई— रागगोविन्द, गीतगोविन्द, नरसीजी का मेहरा, राग सोरठ के पद
- घनानंद— सुजान सागर, प्रेम पत्रिका, प्रेम सरोवर, वियोग बोलि, इश्कलता
- भारतेन्दु हरिश्चं— प्रेमफुलवारी, प्रेम प्रलाप, श्रृंगार लहरी
- रामनरेश त्रिपाठी— पथिक, मिलन और स्वप्न, मानसी, ग्राम्य गीत
- अयोध्या सिंह उपाध्याय “हरिऔध— प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे, रस कलश
- मैथिलीशरण गुप्त— साकेत, यशोधरा भारत भारती, सिद्धराज, द्वापर,पंचवटी
- जयशंकरप्रसाद— कामायनी, झरना, आँसू, लहर, कामना, कल्याणी, स्कंदगुप्त, विशाख, आकशदीप
- सुमित्रानंदन पन्त— कला और बूढा चाँद, तारापथ, गीतहंस, चिदंबरा, उत्तरा
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला— परिमल, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, अराधना गीत गुंज, गीतिका, नये पत्ते
- महादेवी वर्मा— नीरजा, दीपशिखा, यामा, पथ से साथी, अतीत के चल चित्र
- सुभद्राकुमारी चौहान— बिखरे मोती, सीधे-सादे चित्र, झाँसी की रानी, पानी और धूप
- रामधारी सिंह दिनकर— कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रेणुका, हुंकार, रसवन्ती
- माखनलाल चतुर्वेदी— हिमकिरीटिनी, युग चरण, समर्पण



- भवानीप्रसाद मिश्र—गीत फ़रोश, नीली रेखा तक, मानसरोवर
- बालकृष्ण शर्मा नवीन—अपलक, कुंकन, उर्मिला
- सोहनलाल द्विवेदी—भैरवी, पूजा गीत, कुणाल, विषपान, विगुल
- अज्ञेय—आगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी
- हरिवंश राय बच्चन—मधुशाला, मधुबाला, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, मधु कलश
- धर्मवीर भारती— अन्धा युग, कनुप्रिया, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ठंडा लोहा
- केदारनाथ सिंह— अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, बाघ, अकाल में अन्य कविताएँ, तालस्ताय और साइकिल, सृष्टि पर



परिशिष्ट—ब

ईसुरी काल के कवि

1 – ईश्वरी प्रसाद उर्फ 'ईसुरी'
2 – बल्देवप्रसाद पाण्डे
3 – खान फकीरे
4 – ईश्वरी प्रसाद खरे
5 – ख्याली राम
6 – वृन्दावन दास
7 – राजा रनजोर सिंह
8 – शंकर लाल वर्मा 'ललितेश'
9 – रानी कमल कुंवरि
10 – वृषभान कुंवरि
11 – कवि दुज किशोर
13 – कवि दुरजन
14 – शिवदयाल कमरिया
15 – भवानी प्रसाद रिछारिया
16 – रामप्रसाद सक्सेना
17 – हीरालाल व्यास 'हृदेश'
18 – ठाकुर रूप सिंह
19 – मन्नू कवि
20 – धनीराम
21 – डॉ. भवानी सिंह 'भगवन्त'
22 – वृषभान कुँवर
23 – सूरश्याम
24 – रघुनाथ शाह
25 – गंगा प्रसाद सुनार
26 – सेठ अयोध्या प्रसाद अग्रवाल
27 – कवि जुगलेश
28 – रामचरण यदुवंशी
29 – गौरीशंकर
30 – सुधा
31 – हीरालाल 'लाल', मुकुंद स्वामी
32 – घासीराम व्यास
33 – रनमत सिंह सिसौदिया 'ठाकुर'
34 – पं. रामरतन पाठक
35 – माधौ सिंह बुन्देला
36 – श्रीधर बदलू राय
37 – ईसुर मिश्र
38 – अमान सिंह गोटिया
39 – देवीप्रसाद प्रीतम
40 – पं. हरिराम त्रिवेदी
42 – जवाहर दास
43 – महीपत कवि
44 – पं. बैजनाथ व्यास
45 – गोविन्द सिंह यदुवंशी
46 – पं. जानकी प्रसाद द्विवेदी
47 – डॉ भगवत दयाल सिलोइया
48 – कवि नंद किशोर
49 – पं. नारायण व्यास
50 – कविवर रामदास दरजी
51 – मुंशी अजमेरी
52 – मूलचन्द कवि
53 – सेठ भोगीलाल लालन
54 – राम भरोसे शर्मा
55 – परमलाल
56 – बैजनाथ द्विवेदी
57 – रामचन्द्र भार्गव
58 – गया प्रसाद गुप्त
59 – आचार्य घनश्याम पाण्डेय
60 – भगवान दास पाठक
61 – शम्भूदयाल नायक

परिशिष्ट—स

अध्ययन से सम्बन्धित समाचार इत्यादि के स्क्रीनशॉट

विकिपीडिया
https://hi.m.wikipedia.org › wiki

ईसुरी

भारतेन्दु युग के लोककवि ईसुरी पं गंगाधर व्यास के समकालीन थे और आज भी बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। ईसुरी की रचनाओं में ग्राम्य ...

Hindwi
https://www.hindwi.org › isuri › all

ईसुरी की संपूर्ण रचनाएँ

बुंदेलखंड के लोकप्रिय और समर्थ कवि। फाग के लिए स्मरणीय।

कविता कोश
http://kavitakosh.org › ईसुरी

ईसुरी

15-Aug-2016 — ईसुरी - कविता कोश भारतीय काव्य का विशालतम और अव्यवसायिक संकलन है जिसमें हिन्दी उर्दू, भोजपुरी, अवधी, राजस्थानी आदि ...

Sahityapedia
https://sahityapedia.com › चौकड़...

चौकड़िया छंद / ईसुरी छंद , विधान उदाहरण सहित , व छंद से सृजित विधाएं

06-Feb-2022 — सन् 1840 के आसपास ईसुरी कवि के द्वारा किया गया था |. इस छंद को आंचलिक लोकभाषा में ...

Hindustan
https://www.livehindustan.com › sto...

ईसुरी से बुन्देली भाषा की पहचान : हरगोविंद

04-Jan-2018 — गांव मेंढ़की में गुरुवार को विचार व काव्य गोष्ठी की आयोजन किया गया। जिसमें वक्ताओं ने लोक कवि ईसुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ...

Kmuniti
https://www.kmuniti.in › post

बुंदेली लोक कवि ईसुरी की फागें !.... - आयुष अंजान

... . 7 months ago. बुंदेली लोक कवि ईसुरी की फागें ! 750 Views . 35 Stars. 0 Comments . 0 Repost. Like. Comment. Share. Download.

M33 : लोकजीवन के प्रहरी ईसुरी और उनका फाग - काव्य

ईसुरी के फाग - काव्य का विवेचन कर सकेंगे। ... फाग कवि ईसुरी ने अनेक फागों की रचना की जो ...

8 pages · 463 KB

Bundelkhand News
https://www.bundelkhandnews.com › ...

जनश्रुतियों में आज भी जिन्दा हैं लोककवि ईसुरी

23-May-2020 — वह कवि भी क्या जो वीर रस में काव्य रचना न करे। वीर भूमि महोबा में रहे ईसुरी ने ...

समता मार्ग
https://samtamarg.in › ...

बुन्देली बोली के कवि ईसुरी की याद

Bhartiya Sahityas
https://www.bhartiyasahityas.com › ...

Kahi Isuri Faag - कही ईसुरी फाग

जिनमें श्रृंगार काव्य की कोई मर्यादा भी नहीं है। इस उपन्यास का नायक ईसुरी है, मगर कहानी रजऊ की है-प्यार की रासायनिक प्रक्रियाओं की कहानी ...

हिन्दुस्थान समाचार
https://www.hindusthansamachar.in › ...

आज से चौपालों में गूंजेंगे ईसुरी के फागों के बोल

18-Feb-2023 — बुंदेलखंड की चौपाले ईसुरी रचित एवं कवि जीतेंद्र रचित फागों से गुंजायमान होने लगती हैं।

Dainik Bhaskar
https://www.bhaskar.com › news › t...

ईशुरी की फाग व छत्तीसगढ़ के वेगा नृत्य की प्रस्तुति से गिरा फिल्म महोत्सव का पर्दा

सातवें सात दिवसीय खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का शनिवार रात बुंदेली कवि ईसुरी की फाग और छत्तीसगढ़ के वेगा नृत्य की प्रस्तुति ...

कवि ईसुरी के फागों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता





